

आत्मा की अनंत शक्ति का धोतक है जैन दर्शन: राष्ट्र संत सौरभ मुनि -अपने कर्मों का क्षय कर आत्मा प्राप्त करती है परम तत्व

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज- शिवपुरी। जैन दर्शन में आत्मा अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति और अनंत-आनंद का पर्याय है। लेकिन आत्मा के ये गुण कर्मों से आच्छादित रहते हैं इस कारण आत्मा की शक्ति प्रकट नहीं हो पाती। लेकिन साधक यदि अपनी साधना के द्वारा कर्मों का क्षय कर लेता है तो आत्मा को परमात्मा बनने में देर नहीं लगती और आत्मा की यह शक्ति परम तत्व को प्राप्त कर मोक्ष पद को प्राप्त कर लेती है। उक्त उद्गार पोषद भवन में प्रसिद्ध जैन राष्ट्र संत सौरभ मुनि जी ने धर्मोर्वलम्बियों की सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि जैन धर्म 24 तीर्थंकरों की शिक्षाओं पर आधारित है और हर काल में 24 तीर्थंकर विद्यमान रहते हैं। धर्मसंभा में उनके सुशिष्य विज्ञान मुनि भी उपस्थित थे।

धर्मसंभा में संत सौरभ मुनि ने बताया कि जैन धर्म में प्रत्येक आत्मा को परमात्मा बनने का अवसर है। हमारा शरीर पुद्गल (जड़) लेकिन आत्मा अजर-अमर है। परन्तु अपने कर्मों से ढकी होने के कारण वह अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट नहीं होती है। आत्मा को कर्मों से मुक्त करने के लिए जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्ति हेतु तीन मार्ग बताए गए हैं। सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक आचरण से आत्मा को परमात्मा बनने के लक्ष्य तक ले जाना सुगम है। उन्होंने बताया कि आत्मा जब कर्मों के बंधन से मुक्त हो जाती है तो साधक केवली



अवस्था को प्राप्त कर केवल्य ज्ञान का धारक होता है। परमात्मा के इस स्वरूप को अरिहंत के रूप में परिभाषित किया जाता है। अरिहंत भगवान का हमारे ऊपर अनंत उपकार होता है और वह हमें मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर करते हैं। अरिहंत परमात्मा जब संसार त्याग देते हैं तो वह सिद्ध के रूप में हमारे लिए पूजनीय होते हैं। उन्होंने बताया कि नवकार महामंत्र में सबसे पहले अरिहंत भगवान और फिर सिद्ध भगवान को नमस्कार किया जाता है। उनके अलावा आचार्य भगवान, उपाध्याय भगवान और संतों का भी हम पर उपकार होता है और नवकार महामंत्र में उन्हें भी नमस्कार कर अपने भावों की अभिव्यक्ति की जाती है।

कल पोषद भवन में और परसों आराधना भवन में होंगे प्रवचन

आज की धर्मसंभा में श्वेताम्बर मूर्ति पूजक समाज के महामंत्री विजय पारख भी उपस्थित थे जिन्होंने राष्ट्र संत सौरभ मुनि से रविवार 22 फरवरी को श्वेताम्बर पार्श्वनाथ जैन मंदिर के उपाश्रय स्थल आराधना भवन में प्रवचन देने की बिनती की। जिसने संत सौरभ मुनि ने सहर्ष रूप से स्वीकार किया। इस अवसर पर बताया गया है कि महाराजश्री के 21 फरवरी के प्रवचन सुबह 9:30 से 10:30 बजे तक पोषद भवन में और 22 फरवरी के प्रवचन सुबह 9:30 से 10:30 बजे तक आराधना भवन में होंगे। सभी धर्मप्रेमियों से सत्संग का लाभ उठाने की अपील की गई है।

बहराइच में विकास की नई इबारत: ईदगाह रोड निर्माण से तेज़ हुआ चहुमुखी प्रगति का कारवां

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज- बहराइच। नगर पालिका परिषद बहराइच में विकास का पहिया अभूतपूर्व गति से घूम रहा है और नगर के हर कोने तक सुविधाओं की रोशनी पहुँचाने का संकल्प अब जमीन पर उतरता दिखाई दे रहा है। अध्यक्ष प्रतिनिधि श्याम करण टेकड़ैवाल की सक्रियता, दूरदर्शिता और जनसमर्पित कार्यशैली के चलते नगर में बिना किसी भेदभाव के विकास कार्यों की झड़ी लग गई है।

इसी क्रम में उनके विशेष प्रयासों से 19 फरवरी 2026 को ईदगाह रोड निर्माण की टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी गई, जो क्षेत्रवासियों के लिए बड़ी सीमांत मानी जा रही है।

सूत्रों के अनुसार यदि प्रशासनिक औपचारिकाएँ तय समय में पूरी हो



स्थलों तक पहुँच भी आसान करेगी।

नगरवासियों का कहना है कि श्री टेकड़ैवाल की कार्यशैली में न केवल गति है बल्कि स्पष्ट जगहों की भावना भी झलकती है। लोग उन्हें ऐसे जनप्रतिनिधि के रूप में देख रहे हैं जो समस्याओं को सुनते ही नहीं बल्कि समाधान तक पहुँचाने की प्रतिबद्धता भी रखते हैं।

उल्लेखनीय है कि नगर पालिका परिषद की अध्यक्ष श्रीमती सुधा देवी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में नगर प्रशासन विकास की नई ऊँचाइयों को छू रहा है। सड़क, सफाई, जलनिकासी, स्ट्रीट

लाइट और सौंदर्यीकरण जैसे कार्यों में आई तेजी से यह साफ संकेत मिल रहा है कि नगर को आधुनिक, सुव्यवस्थित और सुविधायुक्त बनाने की दिशा में ठोस रणनीति पर काम हो रहा है।

जनमानस का मानना है कि अध्यक्ष श्रीमती सुधा देवी और अध्यक्ष प्रतिनिधि श्री श्याम करण टेकड़ैवाल की जोड़ी नगर विकास की ऐसी मिसाल कायम कर रही है, जिसकी गुंज आने वाले समय में पूरे जनपद में सुनाई देगी। लोगों ने दोनों जनप्रतिनिधियों के प्रति आभार जताते हुए विश्वास व्यक्त किया है कि इसी तरह विकास का यह सिलसिला लगातार जारी रहेगा और बहराइच शीघ्र ही आदर्श नगरों की श्रेणी में शामिल होगा।

मातृभाषा हमारी आत्मा की आवाज है अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, 21 फरवरी पर विशेष आलेख

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृभाषा में लिखने पढ़ने सीखने समझने संवाद स्थापित करने का अधिकार है क्योंकि मातृभाषा हमारी आत्मा की आवाज होती है। वह मात्र शब्दों का समूह या जाल नहीं होती वरन हमारी संस्कृति, संस्कार, मूल्य, परंपरा, विरासत और अस्मिता की पहचान होती है। वह हमारी सोच,समझ, भाव, विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है जो हमें एक दूसरे से जोड़ती है, सामाजिक गठन,व्यक्तित्व विकास,सामाजिक, आर्थिक,सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उन्नयन में सहायक होती है।

सामान्य अर्थों में बच्चा जन्म लेने के बाद पहली बार जिस ध्वनि स्पर्श या संकेत में मां शब्द कहता है वही उसकी मातृभाषा होती है जो वह मां के झूले पालने में, मां की पवित्र गोद में धीरे-धीरे सीखता है। यही उसके भावनात्मक लगाव, सामाजिक जुड़ाव,जटिल मानसिक परिस्थितियों को समझने, संज्ञानात्मक विकास और रचनात्मकता का आधार बनती है।

21 फरवरी को पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने की पुष्टभूमि सन 1952 में तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान वर्तमान में बांग्लादेश में हुए भाषाई आंदोलन से संबंधित है। सन् 1947 में पाकिस्तान के जन्म के बाद उर्दू को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया और पूर्वी पाकिस्तान में भी उर्दू को ही राष्ट्रभाषा के रूप में थीपने का प्रयास किया किंतु पूर्वी पाकिस्तान ने अपनी मातृभाषा बांग्ला को आधिकारिक भाषा घोषित करने की मांग की जिसे पाकिस्तान ने ठुकरा दिया फल स्वरूप 21 फरवरी1952 को ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों ने प्रदर्शन किया जिसे पाकिस्तान की पुलिस ने प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करते हुए बर्बरता पूर्वक समाप्त कर दिया जिसमें अनेक छात्र मारे गए। बांग्लादेश में यह दिवस दुःख दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। मातृभाषा के इस भाषाई संघर्ष को मान्यता देने के लिए वैश्विक स्तर पर मातृभाषा दिवस मनाने की मांग कनाडा के बंगाली नागरिक रफीकूल इस्लाम ने की थी जिसे यूनेस्को ने स्वीकार कर किया और 21 फरवरी 2000 को पहला विश्व मातृ भाषा दिवस मनाया गया।

इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण, बहुभाषिकता के प्रति चेतना, लुप्त प्राय भाषाओं को संरक्षित करना

और मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहित करना है। वास्तव में यह दिवस अपनी मातृभाषा के प्रति निष्ठा, वचनबद्धता,ममत्व, लगाव और भावनात्मक जुड़ाव के प्रकटिकरण का स्मारक दिवस है।

यूनेस्को का अनुमान है कि दुनिया में बोली जाने वाली 7000 भाषाओं में से 40% भाषाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। डिजिटल क्रांति के इस दौर में सोशल मीडिया में मात्र 100 से भी कम भाषाओं का उपयोग हो रहा है।अन्य भाषाएँ इस दौर की चुनौतियों का सामना करने में समर्थ नहीं हो पा रही हैं।यह मानवीय सभ्यता के लिए एक गंभीर संकट है। वैश्वीकरण,शिक्षा और मीडिया में प्रमुख भाषाओं के प्रभुत्व,औपनिवेशिक विरासत, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं तथा आर्थिक कारणों से समुदायों के विस्थापन,क्षेत्रीय तथा अल्पसंख्यक भाषाओं पर तथाकथित पिछड़ेपन या अशिक्षित होने के सांस्कृतिक लोअन तथा लिखित में भाषाओं की स्वयं की लिपि न होने के के कारण भाषाएँ विलुप्त हो रही हैं। इनके साथ ही संपूर्ण बौद्धिक सांस्कृतिक विरासत, हमारी पहचान, प्रकृति, गणित, दर्शन, लोकगीत, लोक कथाएँ, कहावतें मुहावरे, कविताएँ, गीत, दादी,नानी की कहानियाँ,अभिव्यक्ति की अनूठी तकनीक आदि सभी भी विलुप्त हो रही हैं। इसलिए भाषाई विविधता और लुप्त हो रही भाषाओं के संरक्षण, उनके पुनरुद्धार की आवश्यकता, मातृ भाषाओं का सम्मान और मातृभाषा में बोलने के मूल अधिकार की रक्षा करना आज सबसे बड़ी वैश्विक चुनौती है। इसी वास्तविकता को रेखांकित करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 2022 - 2032 को अंतरराष्ट्रीय स्वदेशी भाषा दशक के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। यह दशक इसलिए महत्वपूर्ण है कि हम विलुप्त हो रही भाषाओं के संरक्षण के लिए वैश्विक स्तर पर सकारात्मक पहलों को अंजाम दे क्योंकि भाषाई विविधता हमारी ताकत है विरासत है।

मातृभाषा की महता अनुपम होती है।मातृभाषा के बिना व्यक्ति गुंा हो जाता है। प्रखर पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी ने कहा था ' मुझे देश की आजादी और भाषा की आजादी इनमें से किसी एक को चुनना हो तो मैं निःसंकोच भाषा की आजादी चुनूंगा क्योंकि देश की आजादी के बावजूद भाषा की गुलामी रह सकती है।अगर

भाषा आजाद हुई तो देश गुलाम नहीं रह सकता।' वास्तव में भाषा का रिश्ता महज संवाद तक सीमित नहीं होता यह व्यक्ति की अस्मिता और स्वाधिमान से भी जुड़ी होती है। औपनिवेशिक शासन के चोर विरोधी और स्वभाषा के समर्थक केन्या के महान लेखक थ्योंगो ने कहा था कि 'जब मैं उनकी भाषा में लिखता था तो उन सब का प्रिय लेखक था लेकिन जैसे ही मैंने अपनी मातृभाषा गिकुयू में लिखना प्रारंभ किया तो मुझे गिरफ्तार कर लिया गया तब मेरी समझ में आया कि आजादी तक सिर्फ अपनी मातृभाषा के जरिए ही पहुँचा जा सकता है। '

महात्मा गांधी ने भी 1937 में वर्धा में नई तालीम के प्रस्ताव में बच्चों को अनिवार्य निशुल्क शिक्षा के साथ प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देने और कौशल उन्नयन पर बल दिया था।

भारत के राष्ट्रपति और मिसाइल मैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा था कि यदि से मैंने मातृभाषा में विज्ञान और गणित की शिक्षा प्राप्त नहीं की होती तो आज इतना बड़ा वैज्ञानिक नहीं बन सकता था। अगर विज्ञान को आम जनता तक पहुँचाना है तो विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होने से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है, वे जल्दी सीखते हैं और अपनी संस्कृति से जुड़ते हैं। हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी मातृभाषा स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के रूप में सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

निःसंदेह मातृभाषा हमारी संस्कृति और सामाजिक पहचान से जुड़ी होती है। मातृभाषा से ही हमारी परंपराएँ, रीति रिवाज और बौद्धिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है। अतः मातृभाषा के बिना हम अपने भावों,विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में समर्थ नहीं होते। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि आजादी के अमृत काल में भी हम गुलामी के प्रतीक चिन्हों से चिपके हुए हैं। किस्मिस्त भारत के स्वप्न की पूर्णता हमारी एकजुट एकता, राष्ट्र के प्रति नागरिक कर्तव्यों का पालन, विरासत पर गर्व और गुलामी की हर सोच से मुक्ति पर निर्भर करती है। गुलामी की जंजीरें टूट गईं किंतु अंग्रेजी का प्रभुत्व आज भी कायम है। हम अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के कॉन्वेंट स्कूल में प्रवेश दिलाता सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक मानते हैं। जबकि मातृ भाषा में

शिक्षा प्राप्त करना बच्चों की बौद्धिक रचनात्मकता और संज्ञानात्मक विकास के लिए अहम होती है। मातृभाषा का सम्मान और संरक्षण करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। आज हम अपनी भाषाओं से दूर होते जा रहे हैं। यदि हमारी भाषा अस्तित्वहीन हो गई तो हमारी संस्कृति परंपरा और विरासत भी समाप्त हो जाएगी। इसलिए मातृभाषा का सम्मान, संरक्षण और संवर्धन बहुत आवश्यक है। मातृभाषा के बिना हमारा जीवन अर्थहीन है। जब भाषा मजबूत होती है तो देश भी मजबूत होता है और जब भाषा गुलाम होती है तो देश भी गुलाम हो जाता है। इसलिए हमें अपनी मातृ भाषा में अभिव्यक्ति पर गर्व होना चाहिए।

मातृभाषा से प्रेम राष्ट्र से प्रेम होता है। मातृभाषा की उपेक्षा राष्ट्रीय स्वाधिमान की उपेक्षा होती है। हमें अपनी भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए आवश्यकतानुसार उन्हें सीखना भी चाहिए किंतु मातृ भाषा की बलि देकर नहीं। हमें हर संभव परिस्थितियों में मातृभाषा का उपयोग करना चाहिए क्योंकि यह हमारे सम्मान का प्रतीक है।सोशल मीडिया के सभी पटलों पर मातृभाषा को प्राथमिकता देनी चाहिए। जिस देश को आत्मविश्वास में अपनी मातृभाषा के प्रति आत्मविश्मान का भाव नहीं होता उनका विश्व में भी कहीं सम्मान नहीं होता। भाषा बचती है तो संस्कृति बचती है।

इस दिवस की सार्थकता यह संकल्प लेने में है कि बहु भाषावाद को प्रोत्साहित करते हुए भाषाई विविधता का सम्मान करें। विश्व की अन्य भाषाओं के प्रति अनुराग का भाव रखें। नई प्रौद्योगिकी में अपनी भाषा का उपयोग करें। भाषा को भूलें नहीं उसकी जड़ों से जुड़े और आत्मसात करें।



लेखक डॉ. अशोक कुमार भार्गव पूर्व आईएएस,मॉडिरेनल स्पीकर, इंदौर, मप्र मो.नं. 9425427525

एमिटी विश्वविद्यालय में जीएमए (एआईएमए) के बीच MOU, स्टूडेंट चैप्टर का शुभारंभ हुआ



-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज- ग्वालियर। एमिटी विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश और ग्वालियर मैनेजमेंट एसोसिएशन के बीच विश्वविद्यालय परिसर में स्टूडेंट चैप्टर की स्थापना के लिए MOU पर हस्ताक्षर किए गए। ग्वालियर मैनेजमेंट एसोसिएशन ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन नई दिल्ली से संबद्ध एक प्रतिष्ठित संस्था है। इस समझौते का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रबंधन के क्षेत्र में व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना और उन्हें उद्योग जगत से जोड़ना है।

इस अवसर पर ग्वालियर मैनेजमेंट एसोसिएशन के प्रेसिडेंट और मध्यप्रदेश चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रेसिडेंट डॉ. प्रवीण अग्रवाल उपस्थित रहे। उनके साथ एजीक्यूटिव डायरेक्टर डॉ. मनोज पटवर्धन, सेक्रेटरी श्याम अग्रवाल और जॉइंट सेक्रेटरी मोहित वर्मा भी उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने इस पहल को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी और महत्वपूर्ण बताया। एमिटी विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश के कुलपति प्रो. (डॉ.) आर. एस. तोमर

ने इस पहल की सराहना की। विश्वविद्यालय के प्रो चांसलर लेफ्टिनेंट जनरल वी. के. शर्मा (एवीएसएम, सेवानिवृत्त) ने भी इस सहयोग पर प्रसन्नता व्यक्त की और इसे विद्यार्थियों के भविष्य के लिए लाभकारी बताया। इस अवसर पर हेड ऑफ इंस्टीट्यूशन प्रो. (डॉ.) नविता नाथानी उपस्थित रहीं। इसके साथ ही प्रो. (डॉ.) एम. पी. कौशिक, रजिस्ट्रार डॉ. राजेश जैन, डॉ. द्विवेदी (डीन

अकैडमिक्स) और अन्य अधिकारीगण भी मौजूद रहे। सत्र में विभागाध्यक्ष डॉ. राजीव द्विवेदी और विभागाध्यक्ष डॉ. आस्था जोशी सहित फैकल्टी सदस्य भी उपस्थित रहे। इस समझौते के अंतर्गत विश्वविद्यालय में स्टूडेंट चैप्टर की स्थापना की गई। इस पहल से विद्यार्थियों को उद्योग से जुड़ने का अवसर मिला। इससे उनके कौशल और ज्ञान में वृद्धि हुई। इस सहयोग ने अकादमिक और औद्योगिक संबंधों को और अधिक सुदृढ़ किया।

समाजसेवी नितेंद्र रघुवीर राय फौजी को अखिल भारतीय जायसवाल सर्व. महासभा का राष्ट्रीय वरिष्ठ कार्य. युवाध्यक्ष मनोनीत किया गया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज- झाँसी। अखिल भारतीय जायसवाल सर्व. महासभा के राष्ट्रीय युवा कार्यकारिणी के अध्यक्ष राजा चौधरी, द्वारा अपने संरक्षक मंडल श्रीप्रकाश चौधरी (पूर्व विधायक), प्रदीप भाई जायसवाल (पूर्व विधायक), अशोक जायसवाल SMT के दिशा निर्देश एवं मार्गदर्शन में एवं राष्ट्रीय महामंत्री शैलेंद्र जायसवाल एड., राष्ट्रीय संयोजक एवं प्रभारी उ.प्र. अटल गुप्ता से सल्लाह विमर्श एवं राष्ट्रीय कार्य. अध्यक्ष एवं मीडिया सेल प्रभारी विष्णु शिवहरे एड. की प्रबल संस्तुति पर झांसी निवासी, कलचुरी गौरव, दानवीर एवं समाजसेवी नितेंद्र रघुवीर राय फौजी को राष्ट्रीय वरिष्ठ कार्य. युवाध्यक्ष मनोनीत किया जाता है।



नितेंद्र रघुवीर राय फौजी झांसी के सामाजिक क्षेत्र में, किसी परिचय के मोहातज नहीं है, देश की सेवा * 'भारतीय सेना' से शुरू सफर,* अपना भूमि का व्यवसाय शुरू करने के साथ ही झांसी कलचुरी समाज में भी सेवा-भाव से सक्रिय हो गए। वह

प्रतिवर्ष बिना किसी की सहायता से, स्वयं के संसाधनों से प्रत्येक वर्ष* - 06 दिसंबर 2022 को 6 निर्धन कन्या का विवाह, - 2023 में 13 निर्धन कन्या का विवाह, - 2024 में 21 निर्धन कन्याओं विवाह, एवं - 2025 में 55 निर्धन कन्या का विवाह करके झांसी की नहीं, पूरे देश में कलचुरी कलार समाज में, ऐसी मिसाल कायम की। जिसका सानी कोई नहीं। इसके पूर्व 2016 में झांसी कलचुरी कलार के कार्य0 अध्यक्ष के दौरान 16 सजातीय कन्याओं के विवाह में मुख्य भूमिका का निर्वहन किया साथ ही... उनके नेतृत्व में भगवान श्री सहस्त्रबाह अर्जुन जी की जयंती मनाई जाती रही।

साथ ही वह कृतसंकल्पित है कि झांसी में भगवान श्री सहस्त्रबाहु अर्जुन के नाम से भव्य एवं विराट स्थल होगा और उसमें अपने आराध्य की एक विशाल भव्य मूर्ति का अनावरण भी होगा। ऐसे दृढ़ संकल्प के प्रतिभावान सजातीय गौरव, दानवीर एवं समाजसेवी श्री नितेंद्र रघुवीर राय जी से अखिल भारतीय जायसवाल सर्व. महासभा अपने आपको गौरवान्वित महसूस करती है एवं आपसे अपेक्षा करती है कि युवा महासभा आपके दिशा निर्देशन में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगी। *श्री नितेंद्र रघुवीर राय जी के मनोनयन पर अखिल भारतीय जायसवाल सर्व0 महासभा परिवार की बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

उपभोक्ता सावधान: ऑनलाइन सुविधा के साथ खतरा भी



- डी.सी. सागर - भारत में डिजिटल भुगतान का विस्तार अभूतपूर्व है और यह विकसित भारत @2047 के लिए सशक्त आधारशिला भी है। मोबाइल ऐप्स, QR कोड और नेट बैंकिंग ने लेन-देन को सरल और तेज बना दिया है। लेकिन इसी सुविधा के साथ एक गंभीर खतरा भी जुड़ा है-साइबर अपराधियों द्वारा API (Application Programming Interface) का दुरुपयोग। हाल ही में भोपाल में हुई एक घटना इस खतरे को उजागर करती है जिससे ज्ञान चक्षु खुलना अनिवार्य है।

घटना का विवरण

एक ग्राहक ने सड़क किनारे कैप बेचने वाले विक्रेता से QR कोड स्कैन कर भुगतान करने की कोशिश की। भुगतान असफल रहा। विक्रेता ने ग्राहक से मोबाइल 'जॉचने' के लिए मांगा। ग्राहक ने कुछ सेकंड के लिए फोन सौंप दिया। इन्हीं कुछ सेकंडों में विक्रेता ने मोबाइल के API और डेटा से छेड़छाड़ कर 3 लाख की राशि ग्राहक के बैंक खातों से निकाल ली। आश्चर्यजनक रूप से किसी भी लेन-देन से पहले ग्राहक को OTP तक

नहीं मिला। यह घटना बताती है कि अपराधी अब केवल पासवर्ड या OTP चुराने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सीधे API स्तर पर हमला कर रहे हैं।

OTP न आने पर बैंक की जिम्मेदारी

यदि किसी ग्राहक को OTP प्राप्त नहीं हुआ और फिर भी बैंक खाते से राशि डेबिट होकर धोखेबाज के खाते में चली गई, तो यह सिस्टम की विफलता (systemic failure) और बैंकिंग सुरक्षा व्यवस्था का टूटना है। ऐसे मामलों में ग्राहक दोषी नहीं माना जाएगा। RBI के उपभोक्ता संरक्षण नियमों के अनुसार, बैंक ही जिम्मेदार होगा और उसे ग्राहक को मुआवजा देना होगा। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि OTP सुरक्षा तंत्र का असफल होना बैंक की जवाबदेही को जन्म देता है।

API अटैक: तकनीकी दृष्टि से

API मोबाइल ऐप्स और बैंकिंग सर्वरों को जोड़ने वाली रीढ़ की हड्डी है। जब इनकी निगरानी नहीं होती, तो ये अपराधियों के लिए हार्डवे बन जाते हैं। इस मामले में संभवतः

- API सत्र हाईजैक कर चुपचाप ट्रॉजेंकेशन किया गया।
- मैलिशियस रिक्वेस्ट इंजेक्ट कर बैंकिंग ऐप्स को धोखा दिया गया।
- कमजोर ऑथेंटिकेशन का फायदा उठाकर OTP सुरक्षा को दरकिनार किया गया।
- स्टोर किए गए टोकन/क्रेडेंशियल्स का दुरुपयोग कर कई खातों तक पहुंच बनाई गई।

वैश्विक उदाहरण और सबक

- Uber (2022) - MFA को बायपास कर हार्डकोडेड क्रेडेंशियल्स से सिस्टम तक पहुंचा
- T-Mobile (2023) - शैडेडAPI से 37 मिलियन ग्राहकों का डेटा लीक।
- Twitter/X (2019) - API खामियों से 1.7 करोड़ फोन नंबर खातों से चुरे हुए।
- Slack (सफल उदाहरण) - लेयर्ड सिन्क्रोरिटी, RBAC और जीरो-ट्रस्ट से API सुरक्षित।

सटीक सबक: केवल एक खामी नहीं, बल्कि निगरानी की कमी और अनियंत्रित एक्सेस ही सबसे बड़ा खतरा है।

साइबर अपराध के आँकड़े

- CERT-In के अनुसार भारत में साइबर घटनाएँ 2022 में 10.29 लाख से बढ़कर 2024 में 22.68 लाख हो गईं।
- RBI वार्षिक रिपोर्ट 2025 के अनुसार बैंकों ने FY25 में 13,516 धोखाधड़ी मामलों की रिपोर्ट की, जिनमें 520 करोड़ शामिल थे। ये आँकड़े बताते हैं कि खतरा कितना बढ़ा है और सतर्कता कितनी जरूरी है।

RBI दिशा-निर्देश: ग्राहक की सुरक्षा

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने डिजिटल पेमेंट सुरक्षा नियंत्रण (2024) में निर्देश दिए हैं:

- सभी डिजिटल भुगतान में मजबूत ऑथेंटिकेशन।
- रियल-टाइम फ्रॉड डिटेक्शन और अलर्ट।
- यदि ग्राहक दोषी नहीं है, तो उसकी लायबिलिटी सीमित होगी। इस मामले में OTP साझा नहीं किया गया, इसलिए ग्राहक दोषी नहीं है। बैंक को जांच कर मुआवजा देना होगा।

IT Act और कानूनी उपाय

- धारा 43 A - डेटा सुरक्षा में

विफलता पर मुआवजा।

- धारा 66C, 66D - पहचान की चोरी और कंप्यूटर संसाधन से धोखाधड़ी पर सजा।
- धारा 72 - गोपनीयता का उल्लंघन करने पर दंड।
- Jan Vishwas Act 2023 - IT Act में संशोधन कर कई अपराधों को सिविल पेनल्टी में बदला गया।
- DPDP Act 2023 - व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा पर विशेष प्रावधान।

शासन द्वारा प्रदत्त संसाधन

- हेल्पलाइन 1930 - वित्तीय साइबर धोखाधड़ी की रिपोर्टिंग।
- राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (cybercrime.gov.in) - ऑनलाइन शिकायत दर्ज करें।
- Cyber Dost (आईटी मंत्रालय) - साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान।

नागरिकों के लिए सुरक्षा रणनीति

- कभी भी अपना मोबाइल किसी अजनबी को न दें।
- बैंकिंग ऐप्स में बायोमेट्रिक लॉक लगाएँ।
- ऐप परमिशन नियमित रूप से जाँचें।
- ऐप्स को अपडेट रखें।
- धोखाधड़ी होते ही बैंक और 1930 पर रिपोर्ट करें।
- परिवार को जागरूक करें-अपराधी अक्सर बुढ़ों को निशाना बनाते हैं।

त्वरित RBI शिकायत प्रक्रिया

1. तुरंत बैंक को सूचित करें और लिखित शिकायत दर्ज करें।
2. 1930 हेल्पलाइन पर कॉल करें।
3. cybercrime.gov.in पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज करें।
4. RBI उपभोक्ता संरक्षण नियमों का हवाला दें।
5. यदि समाधान न मिले, तो RBI Ombudsman से संपर्क करें।

स्व. प्रेमनारायण जायसवाल ने देश की राजनीति में विशेष पहचान बनाई

पचमढ़ी नगर के दिलों में अपनी अशुण्णता की पहचान बनाने वाले - देश प्रदेश और दिल्ली तक की गलियारों में श्री स्वं श्री प्रेमनारायण जी जायसवाल एक ऐसा अनकहा व्यक्तित्व रहा जिसने विरासतों की परम्पराओं में पचमढ़ी की नहीं देश की राजनीति में अपनी निष्ठाओं की पहचान देकर गति दी है- पचमढ़ी की राजनीति में चाचाजी के बाद ऐसी शख्सियत अब कोई दूसरी नहीं,, यह एक कड़वा सच है - अब है - चाटुकारिता और चरणदास और स्वार्थ की राजनीति



जहाँ अपनी ऊर्जा को एक पहचान दी वहीं लौकिकताओ से परे समय समय पर अपने अनर्गम के सीदयों को भी विविध सौंपा नो पर अपनी पहचान दी ... व्यक्ति की लौकिक क्रियाशीलता

तो सबके सामने आ ही जाती है परन्तु इन सबके बीच अंतरमन की सुंगंध को पहचानने के लिए अनुभूतियों की धरती भी आवश्यक होती है -- ऐसे थे नगर के - जन के प्यारे - समाज -राज्य -देश में पचमढ़ी को पहचान दिलाने वाले हमारे नगर के - स्वं श्री चाचाजी प्रेमनारायण जी जायसवाल - उनकी-27 वी - पुण्यतिथि के अवसर पर हम सभी नगर वासियों ने इस - महामानव को श्रद्धासुमन अर्पित किये और परिवार जनों की निष्ठाओं और परम्पराओं ने सुंदरकांड का विधिवत पाठ कराया - हमारे नगर की पहचान नगर काँग्रेस की पहचान देश में ख्याति प्राप्त इस

विलक्षण व्यक्तित्व को उनकी 27 वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन अर्पित स्वं श्री प्रेमनारायण जायसवाल इंदिरा गांधी से लेकर पंडित जवाहरलाल नेहरू राजीव और अन्य दिल्ली की गलियारों और राष्ट्रपति भवन में गुंजती थी पचमढ़ी की आवाज - उनके जाते ही - एक राजनीतिक निस्वार्थ सेवा भावी को जब से पचमढ़ी ने खोया है तब से लेकर आज तक - पचमढ़ी की राजनीति में - चापलूस चरणदास और स्वार्थ की अंधी राजनीति में पचमढ़ी को खोजना पड़ेगा मध्य क्षेत्र के किसी मसीहों को*

प्रस्तुति डॉ. मनोज दुबे लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं



कक्षा 5 व 8वीं की वार्षिक परीक्षायें शुरू रिटायर्ड फौजी ने खुद को गोली मारकर की आत्महत्या

- 2900 परीक्षार्थी नहीं हुये पहले दिन की परीक्षा में शामिल



ग्वालियर। बोर्ड पैटर्न पर राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा शुक्रवार से कक्षा 5 व 8वीं की वार्षिक परीक्षायें शुरू हो गईं। दोनों कक्षाओं की परीक्षाओं का समय दोपहर पाली में 2 बजे से शाम 4.30 बजे तक रखा गया है। परीक्षाओं के लिये 55 जनशिक्षा केन्द्रों में 288 परीक्षा केन्द्र बनाये



गये हैं। जहां शुक्रवार को शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले करीब 64 हजार परीक्षार्थियों ने उपस्थित होकर पहला पर्चा हल किया। सभी 288 परीक्षा केन्द्रों पर शांतिपूर्वक परीक्षा हुई। जिला शिक्षा केन्द्र के अनुसार जिले में पहले दिन शुक्रवार को कक्षा

ग्वालियर। महाराजपुरा थाना क्षेत्र के शताब्दीपुरम में रहने वाले 50 वर्षीय रिटायर्ड फैजी ने शराब के नशे में अपनी लायसेंसी रायप्ल से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। रिटायर्ड फैजी ने बिस्तर पर बैठकर रायप्ल की नली सिर के पास सटाकर ट्रिगर दबा दिया, जिससे उसके सिर और चेहरे का उपरी हिस्सा उड़ गया और मांस के चीथड़े दीवार और छत पर जा चिपके और फैजी की एक आंख तीन फीट दूर जा पड़ी। धमाके की आवाज सुनकर परिजन जब कमरे में पहुंचे तो फैजी की मौत हो चुकी थी। मामले की जानकारी मृतक के परिजनों ने पुलिस को दी। मामले का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पीएम के लिये भिजवाकर मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। फैजी ने आत्महत्या किन कारणों के चलते की इस बात का खुलासा नहीं हो सका है।

जानकारी के मुताबिक महाराजपुरा

थाना क्षेत्र के शताब्दीपुरम में रहने वाले



से 2 बजे के बीच श्याम बिहारी के कमरे से जब धमाके की आवाज आई तो परिजन कमरे में पहुंचे तो देखा कि श्याम बिहारी बिस्तर पर खून से लथपथ पड़े थे। उनके पास में 315 बोर की राइफल पड़ी थी। जिसके बाद परिजनों ने महाराजपुरा पुलिस को मामले की सूचना दी। मामले की सूचना मिलते ही महाराजपुरा पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में

लेकर जांच शुरू की। घटना के बाद जांच के लिए फॉरेंसिक टीम को भी मौके पर बुलाया गया। फॉरेंसिक टीम ने बिस्तर और दीवार, छत से सबूत जुटाए हैं। साथ ही राइफल से फिंगरप्रिंट लिए हैं। मृतक के शव से 3 फीट दूर उसकी एक आंख पड़ी मिली। पुलिस पुष्टताछ में परिजनों ने बताया कि श्याम बिहारी सुबह से ही शराब पी रहे थे। रात में नशे की हालत में अपने कमरे में सो गए थे, इसलिए किसी ने उन्हें परेशान नहीं किया। आसपास के लोगों ने पुलिस को बताया कि फैजी चार साल पहले रिटायर हो गया था। उस समय मिले रूपयों को उसने कुछ जमीन में इन्वेस्ट किया था। जमीन की कीमत ज्यादा नहीं बढ़ी। इन्वेस्टमेंट की वजह से तंगी हालत हो गई थी। घर में टेशन और परेशानी थी। विवाद भी होते रहता था। इसी वजह से आत्महत्या की होगी। फिन्हाल पुलिस ने शव का पीएम कराकर मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

शराब के रूपये न देने पर की थी फायरिंग, चार बदमाश गिरफ्तार

ग्वालियर । माधौगंज थाना पुलिस ने शराब के रूपये न देने पर एक युवक के घर के बाहर फायरिंग करने वाले तीन बदमाशों और एक बाल अपचारी को गिरफ्तार किया है। बदमाशों की गिरफ्तारी गुरुवार देर रात चिरवाई नाका हनुमान मंदिर के पास झाड़ियों से की गई। पुलिस ने आरोपीयों के पास से बिना नंबर की एक स्कॉर्पियो, एक 315 बोर का कट्टा और दो खाली खोके बरामद किए हैं।

माधौगंज थाना क्षेत्र में 18 फरवरी की रात करीब 11.30 बजे आरोपियों ने हेम सिंह के परदे मुर्गी फर्म निवासी गौतम चौरसिया के घर के बाहर

गाली-गलौज करते हुए फायरिंग की



थी। घटना के दौरान बदमाशों के अन्य साथियों अश्वय नागिल और बाल अपचारी ने गौतम के पड़ोसी की घर के बाहर खड़ी कार में भी तोड़फेंड

की थी। पुलिस ने पकड़े गए बदमाशों

लंगड़ाकर चल रहे थे। पकड़े गए बदमाशों की पहचान 22 वर्षीय योगेश कंधाना निवासी महलगांव, 22 वर्षीय सुमित चौहान निवासी गोवर्धन कॉलोनी गोला का मंदिर और 20 वर्षीय अश्वय नागिल निवासी करौली माता मंदिर महलगांव के रूप में हुई है। माधौगंज थाना प्रभारी दिव्या तिवारी ने बताया कि रंगदारी दिखाते हुए शराब के रूपये न देने पर युवक के घर के बाहर फायरिंग करने वाले एक बाल अपचारी सहित चार बदमाशों को गिरफ्तार किया गया है। उन्हें घटनास्थल पर ले जाकर घटना को समझने का प्रयास किया गया।

इंदौर के युवक का शव ग्वालियर में मिला, चार दिन से था लापता

ग्वालियर। इंदौर के एक युवक का शव गुरुवार देर रात गोला का मंदिर इलाके में ब्रिगेडियर तिराहा स्थित पुटपाथ पर पड़ा मिला। मृतक युवक चार दिन से लापता था। 16 फरवरी को इंदौर में उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई गई थी। मामले की जानकारी मिलते ही मृतक के बाद परिजन ग्वालियर पहुंचे और शुक्रवार सुबह शव लेकर इंदौर के लिए रवाना हो गये।

गोला का मंदिर थाना पुलिस के अनुसार गुरुवार रात 11.45 बजे ब्रिगेडियर तिराहा के पुटपाथ पर एक युवक का शव पड़े होने की सूचना मिली थी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और युवक के पास मिले दस्तावेजों से उसकी पहचान इंदौर निवासी 30 वर्षीय प्रमोद पुत्र भेरूलाल सिसौदिया के रूप में हुई। पुलिस ने शव को निरानाी में लेकर पोस्टमार्टम हाउस भेजा और परिजनों

को सूचना दी। इंदौर से ग्वालियर आये मृतक के बहनोई गाँवदेव कुमार ने बताया कि प्रमोद इंदौर में कार डेकोरेशन का काम करता था। वह चार दिन से लापता था और 16 फरवरी को इंदौर में उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई गई थी। अब ग्वालियर पुलिस से उसकी मौत की सूचना मिली है। परिजनों ने सवाल उठाए हैं कि प्रमोद इंदौर से ग्वालियर कैसे पहुंचा और किन परिस्थितियों में पुटपाथ पर पड़ा रहा? पुलिस यह भी जांच कर रही है कि कहीं उसे किसी ने ग्वालियर बुलाया तो नहीं था। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है और युवक की मौत किन परिस्थितियों में हुई, इसका पता लगाया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि शॉर्ट पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का खुलासा हो सकेगा।

विवाह समारोह से लौट रहे युवकों की कार में ट्रक ने मारी टक्कर, एक की मौत

ग्वालियर। शादी समारोह में शामिल होकर वापस घर जा रहे युवक हदसे का बस फेंक हो गए। युवकों की कार को पीछे से आ रहे ट्रक चालक ने टक्कर मार दी। ट्रक की टक्कर से कार पलट गई, जिससे बैठे युवक घायल हो गए। हदसे की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल भिजवाया, जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद एक युवक को मृत घोषित कर दिया। हदसे में एक अन्य घायल है, जिसका इलाज चल रहा है। हदसा गुरुवार-शुक्रवार की दमियायानी रात 1.30 बजे मेवाती ढाबा से पहले बायपास रोड पर हुआ। पुलिस ने मर्ग कायम कर हदसे की जांच शुरू कर दी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार विकास राव पुत्र पंजाब सिंह रावत निवासी केरुआ, जोगेन्द्र सिंह रावत पुत्र प्राण सिंह रावत निवासी धोबट बेलगढ़ा, शिवेन्द्र रावत तथा एक अन्य युवक शादी में शामिल होने के लिए मुरैना जिले के बानमोर आए थे। शादी

समारोह में शामिल होने के बाद चारों दोस्त रात में ही घर जाने के लिए कार से निकले। बामोर से कुछ दूर निकले ही थे कि डबरा बायपास पर मेवाती ढाबा के पास ट्रक चालक ने लापरवाही से वाहन चलाते हुए कार में टक्कर मार दी। टक्कर लगने से कार पलट गई और उसमें बैठे युवक घायल हो गए। हदसे पर हदसे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को तुरंत इलाज के लिए अस्पताल रवाना किया। हदसे में जोगेन्द्र सिंह रावत पुत्र प्राण सिंह रावत निवासी धोबट बेलगढ़ा को सिर में गंभीर चोट लगी थी। उसका दोस्त शिवेन्द्र रावत भी बुरी तरह से घायल था। पुलिस जब घायलों को लेकर जाएएच पहुंची तो वहां चिकित्सकों ने नज्ज पर हाथ रखते ही जोगेन्द्र सिंह पुत्र प्राण सिंह निवासी बेलगढ़ा को मृत घोषित कर दिया। चिकित्सकों के अनुसार जोगेन्द्र सिंह ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया था। हदसे में घायल हुए शिवेन्द्र का इलाज चल रहा है। पुलिस ने मामला दर्ज कर वाहन

चालक की तलाश शुरू कर दी है।

लॉडिंग वाहन की टक्कर से युवक घायल

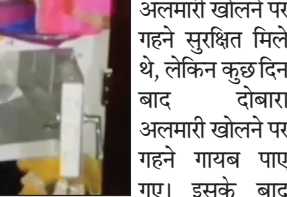
लॉडिंग वाहन के चालक ने बाइक से घर जा रहे युवक में पीछे से टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को इलाज के लिए सिविल अस्पताल हजीरा में भर्ती कराया गया है। विष्णु शर्मा पुत्र सौताराम शर्मा निवासी साईं वाटिका के पास चार शहर का नाका बोती रात बाइक से घर जा रहा था। विष्णु शर्मा राजपुत नाश्ता वाले की दुकान तक पहुंचा था, तभी पीछे से आ रहे लॉडिंग वाहन नम्बर एमपी07जेड्यू-3302 के चालक ने उसमें टक्कर मार दी। लॉडिंग वाहन की टक्कर से विष्णु शर्मा बाइक सहित सड़क पर गिर गया। हदसे में घायल विष्णु शर्मा को स्थानीय निवासियों ने मदद करते हुए सिविल अस्पताल हजीरा पहुंचाया जहां उसका इलाज चल रहा है।

राजस्व विभाग की एडीसी के घर से गहने चोरी

ग्वालियर। राजस्व विभाग में पदस्थ महिला एडीसी के घर से अलमारी में रखे करीब 10 तोला सोने के जेवररात चोरी हो गए। घटना 16 दिसंबर 2025 की है। उस समय महिला अधिकारी अपने काम पर गई हुई थीं। मामला पड़ाव थाना क्षेत्र के न्यू साकेत नगर, तानसेन रोड का है। घर की मालकिन ने चोरी की आशंका घर में काम करने वाली नौकरानी पर जताई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

न्यू साकेत नगर, तानसेन रोड निवासी रानी वर्मा राजस्व विभाग के राजस्व मंडल में एडीसी के पद पर पदस्थ हैं। वह रोज सुबह करीब 10.30 बजे घर से कार्यालय जाती हैं और शाम लगभग 6.30 बजे लौटती हैं। उनके घर पर रामवती डकोनिया पति अजय वर्मा, निवासी इंद्रानगर चार शहर का नाका, साफसफाई का काम

करती है। रानी वर्मा का कहना है कि नौकरानी को पता था कि अलमारी की चाबी दराज में रखी रहती है। 16 दिसंबर को



गहने सुरक्षित मिले थे, लेकिन कुछदिन बाद दोबारा अलमारी खोलते पर गहने गायब पाए गए। इसके बाद उन्होंने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। गहने चोरी होने पर मकान मालिक ने नौकरानी पर संदेह जताते हुए उसे पड़ाव थाने पुलिस के हवाले किया। पुलिस ने उससे पुष्टताछ की, हालांकि फिन्हाल उसे छोड़ दिया है। चोरी गए जेवररात में एक सोने का हार, एक मंगलसूत्र, कान के लटकन की एक जोड़ी, चार लेडीज अंगूठियां और दो चूड़ियां शामिल हैं। कुल सोना करीब 10 तोला बताया जा रहा है, जिसकी कीमत लगभग 15 लाख रुपए आंकी गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

निर्वाचक नामावली का

अंतिम प्रकाशन आज

ग्वालियर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्वाचक नामावली के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तहत निर्धारित संशोधित कार्यक्रम के अनुसार ग्वालियर जिले में भी फोटोयुक्त निर्वाचक नामावली (अंर्हत तिथि 01.01.2026) का अंतिम प्रकाशन 21 फरवरी को किया जाएगा। इस संबंध में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधी की बैठक इस दिन दोपहर 12 बजे कलेक्ट्रेट के सभागार में आयोजित होगी। इस बैठक में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों को निर्वाचक नामावली के संबंध में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी।

हार्डकोर्ट के फैसले के बाद डॉ. गुप्ता पर कार्रवाई की उठी मांग

- गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय से संबद्ध है सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल

ग्वालियर। गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय से संबद्ध सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल अधीक्षक डॉ. गिरिजा शंकर गुप्ता की विभागीय जांच अब नए सिरे से शुरू होगी। आवश्यकता होने पर महाविद्यालय डीन स्वयं जांच कर या कराकर अनुशासनात्मक कार्रवाई कर सकते हैं। हार्डकोर्ट के इस फैसले के बाद डॉ. गिरजा शंकर गुप्ता की मुश्किलें बढ़ गई हैं। महाविद्यालय अधिष्ठाता को पत्र

लिखकर स्वतंत्र एकता मंच के अध्यक्ष ने डॉ. गुप्ता पर जल्द से जल्द कार्रवाई की मांग की है।

स्वतंत्र एकता मंच के अध्यक्ष भानू प्रताप चौरसिया ने मांग की है कि सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल अधीक्षक डॉ.गिरजा शंकर गुप्ता ने जिन दस्तावेजों को लगाकर नौकरी हाँथिया है, वह फर्जी हैं। इसका खुलासा स्वयं संस्था प्रमुख कर चुके हैं। इसके बाद विभागीय जांच में चिकित्सकों से हुई त्रुटी के कारण अब हार्डकोर्ट ने फैसला सुनते कार्रवाई की अधिकार डीन को दिया है। स्वतंत्र एकता मंच के अध्यक्ष ने महाविद्यालय अधिष्ठाता से मांग

की है कि फर्जीबाड़ा कर अधीक्षक की कुर्सी हथियाने वाले डॉ. गिरजा शंकर गुप्ता पर जल्द से जल्द कार्रवाई की जाए। गौरतलब है कि सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल अधीक्षक डॉ. गिरिजा शंकर गुप्ता की विभागीय जांच शुरू हुई थी। जिसे डॉ. गुप्ता ने हार्डकोर्ट में चैलेंज किया था। इस पर हार्डकोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा कि महाविद्यालय डीन स्वयं जांच कर या जांच कराकर अनुशासनात्मक कार्रवाई कर सकते हैं। इसके बाद से डॉ. गुप्ता पर कार्रवाई की मांग तेज हो गई है। वहीं अधिकार में फर्जीबाड़े पर अभी फैसला आना बाकी है।



संपादकीय

कार्य-संस्कृति, उत्पादकता और विकास की चुनौती

के.एस. तोमर,

चांसलर फ्रेडरिक मर्ज के नेतृत्व में जर्मनी का आर्थिक आत्ममंथन बर्लिन से कहीं आगे तक गुंजने वाली बहस बन चुका है। जब विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का प्रमुख नागरिकों से समृद्ध बनाए रखने के लिए ‘अधिक काम’ करने का आह्वान करता है, तो यह सांस्कृतिक आलस्य नहीं, बल्कि संरचनात्मक दबाव का संकेत होता है। मर्ज ने ‘लाइफस्टाइल पार्ट-टाइम वर्क’, अत्यधिक बीमार अवकाश व चार-दिवसीय कार्य-सप्ताह की अवधारणा की आलोचना करते हुए कहा है कि ‘वर्क-लाइफ बैलेंस और चार-दिवसीय सप्ताह वर्तमान समृद्धि को बनाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं होंगे।’ उन्होंने ग्रीस जैसे देशों में अधिक कार्य-घंटों की भी सराहना की है।आलोचक तर्क देते हैं कि जर्मनी की प्रति घंटा उत्पादकता अब भी विश्व में अग्रणी है (ओईसीडी के अनुसार), किंतु मर्ज कुल कार्य-परिमाण पर बल देते हैं। 2026 में जर्मनी का अनुमानित जीडीपी 5.33 ट्रिलियन डॉलर (आइएमएफ अनुमान) है- जो उसे अधिकांश देशों से आगे रखता है, पर लगभग 32 ट्रिलियन डॉलर की अमरीकी अर्थव्यवस्था और 21 ट्रिलियन डॉलर के चीन से काफी पीछे है। भारत, लगभग 4.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के साथ, समग्र आकार में अंतर घटा रहा है, भले ही प्रति व्यक्ति आय में बड़ा अंतर कायम है। स्पष्ट है कि यह बहस केवल जर्मनी की नहीं, बल्कि वृद्ध होतो आबादी और बदलती वैश्विक शक्ति-संरचना के बीच विकास बनाए रखने की चुनौती का प्रतीक है।

यह प्रश्न पूरे विकसित विश्व के सामने है। जर्मनी यूरोप की औद्योगिक धुरी और वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं का प्रमुख चालक है। उसका इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल, रसायन और पूंजीगत वस्तु क्षेत्र एशिया और भारत से गहराई से जुड़ा है। वहां की किसी भी संरचनात्मक मंदी का असर मध्यवर्ती वस्तुओं की मांग, तकनीकी साझेदारी और निवेश प्रवाह पर पड़ता है।

श्रम नीति में परिवर्तन एशियाई उत्पादन नेटवर्क तक लहर पैदा करता है और निर्यात-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं की रणनीतियों को प्रभावित करता है। पिछले दो दशकों से जर्मनी की जनसंख्या लगभग स्थिर है; प्राकृतिक वृद्धि नकारात्मक रही है, जिसे अप्रवासन ने संभाला है। समृद्धि बढ़ने के साथ प्रति श्रमिक वार्षिक कार्य-घंटे घटे हैं। 2024-25 के यूरोस्टैट और ओईसीडी आंकड़ों के अनुसार औसत साप्ताहिक कार्य-घंटे 33.9-34.6 हैं- यूरोपीय संघ में सबसे कम में से एक है- जो लगभग 1,350 वार्षिक घंटों के बराबर है, जबकि ग्रीस में यह लगभग 39.8 है। यह एक परिपक्व कल्याणकारी समाज की प्रवृत्ति है, जहां भौतिक सुखा के बाद अवकाश को महत्व मिलता है।

इसके विपरीत, चीन ने विशाल श्रम-निवेश और निर्यात-उन्मुख विस्तार से कुल आकार में जर्मनी को पीछे छोड़ा, जबकि अमरीका ने बेहतर जनसांख्यिकी, श्रम-लचीलापन और नवाचार से बढ़त बनाए रखी। भारत के लिए संकेत स्पष्ट है। जर्मन कंपनियां उच्च श्रम लागत और जनसांख्यिकीय दबाव के बीच लागत-कुशल बाजारों की ओर रुख कर सकती हैं। जनवरी 2026 में संपन्न भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता, जिसके तहत 2032 तक यूरोपीय निर्यात दौगुना होने और 96% से अधिक वस्तुओं पर शुल्क में कटौती का अनुमान है, भारत-जर्मनी व्यापार (जो 29 अरब डॉलर से अधिक है) को गति द सकता है। परंतु केवल जनसांख्यिकीय लाभ पर्याप्त नहीं। कोशल, उत्पादकता और नियामकीय सुधार अनिवार्य हैं।मर्ज का तर्क है कि समग्र ‘कार्य-प्रदर्शन’ अपर्याप्त है। दशकों में प्रति कर्मचारी वार्षिक कार्य-घंटे घटे हैं- यह आलस्य नहीं, बल्कि उच्च आय वाले समाज का तर्कसंगत व्यवहार है। जब वेतन ऊंचे हों, तो श्रमिक अतिरिक्त आय की बजाय अवकाश चुन सकते हैं। मजबूत श्रम-सुरक्षा और कड़े कार्य-समय नियमों ने कार्य-जीवन संतुलन सुनिश्चित किया है, पर लचीलापन सीमित किया है। तीव्र वैश्विक प्रतिस्पर्धा में कठोर संरचनाएं बाधा बन सकती हैं।जनसांख्यिकीय दबाव और गंभीर है। डेटाटिस के अनुसार 2035 तक 67 वर्ष से अधिक आयु वाले लोगों की हिस्सेदारी 25-27% तक पहुंच सकती है। वृद्धावस्था निर्भरता अनुपात भी तेजी से बढ़ेगा।

डिजिटल क्रांति ने इस दूरी को और भी गहराई दी है। दोस्त अब मोहल्ले की गली या गांव की चौपाल पर नहीं मिलते, वे सोशल मीडिया और आभासी खेलों की दुनिया में मिलते हैं। भाई-बहन एक ही घर में रहकर भी अपने-अपने डिजिटल कमरों में कैद हैं। किसी के कानों में हेडफोन है, किसी की आंखों पर मोबाइल की स्क्रीन चमक रही है। माता-पिता के पास बच्चों से बात करने का समय नहीं और बच्चों के पास माता-पिता को सुनने का धैर्य नहीं।

आत्मा खोने पर सिर्फ नाम और नंबर की सूची बनकर रह जाएंगे रिश्ते

रिश्ते कभी वसंत की तरह खिलखिलाते हैं, कभी बरसात की तरह गीला-गीला होते हैं, कभी ग्रीष्म की तरह तपते हैं और कभी पतझड़ की तरह सूने-सूने लगते हैं। मगर बीते कुछ दशकों में इनका बदलना सिर्फ स्वाभाविक चक्र नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के गहरे बदलावों का आईना भी बन गया है। आज जब हम चारों ओर देखते हैं, तो पाते हैं कि रिश्तों का रूप, उनकी परिभाषा और उनका निभाया जाना-सब कुछ बदल रहा है। यह स्थिति हमें कभी सुकून देती है, तो कभी बेचैनी से भर देती है।कभी भारतीय समाज की सबसे बड़ी पहचान संयुक्त परिवार हुआ करती थी। एक ही छत के नीचे तीन-चार पीढ़ियां साथ रहती थीं। बच्चों का पालन-पोषण सिर्फ मां-बाप तक सीमित नहीं था, उसमें दादी-नानी का दुलार, बड़ों की डांट और छोटे-बड़े भाई-बहनों की शरारतें शामिल थीं। त्योहार धार्मिक अवसर मात्र नहीं होते थे, बल्कि वे पारिवारिक एकजुटता और रिश्तों की मजबूती का उत्सव होते थे। अब वही संयुक्त परिवार टूटकर छोटे-छोटे फ्लैटों में सिमट गए हैं। महानगरों की नौकरी और पढ़ाई ने हमें ऐसी जगह पहुंचा दिया है, जहां न तो आंगन है, न चौपाल। चार पीढ़ियों का साथ अब दुर्लभ हो गया है। रिश्तों की नजदीकी धीरे-धीरे दूरी में बदल गई है। डिजिटल क्रांति ने इस दूरी को और भी गहराई दी है। दोस्त अब मोहल्ले की गली या गांव की चौपाल पर नहीं मिलते, वे सोशल मीडिया और आभासी खेलों की दुनिया में मिलते हैं। भाई-बहन एक ही घर में रहकर भी अपने-अपने डिजिटल कमरों में कैद हैं। किसी के कानों में हेडफोन है, किसी की आंखों पर मोबाइल की स्क्रीन चमक रही है। माता-पिता के पास बच्चों से बात करने का समय नहीं और बच्चों के पास माता-पिता को सुनने का धैर्य नहीं। संवाद जो कभी रिश्तों की जान हुआ करता था, अब सोशल मीडिया के अलग-अलग मंचों



पर 'स्टेट्स अपडेट' की दुनिया में बिखर गया है। शिकायतें सीधे कहे जाने के बजाय इशारों और 'इमोजी' में बदल गई हैं। डिजिटल दुनिया ने कुछ नए रास्ते खोले हैं यह भी सच है कि डिजिटल दुनिया ने कुछ नए रास्ते खोले हैं। परदेस गया बेटा अब अपनी मां से रोज वीडियो काल के जरिए बात कर सकता है। बहरन-भाई रक्षाबंधन पर आनलाइन तोहफे भेज सकते हैं। विदेश में बैठा छात्र अपने गांव की शादी का सीधा प्रसारण देख सकता है। यह सब तकनीक की देन है और रिश्तों को नई तरह की निकटता भी देती है। मगर सवाल यही है कि क्या यह निकटता असली अपनापन बन पाती है? दिल का 'इमोजी' क्या सचमुच धड़कते दिल की गर्माहट पहुंचा सकता है? एक को वीडियो काल क्या मां की गोद का विकल्प हो सकता है? नई पीढ़ी रिश्तों को बराबरी की

नजर से देखती है। बेटियां अपने फैसले खुद ले रही हैं, बेटे घर के कामों में हाथ बंटा रहे हैं। विवाह और दोस्ती, दोनों में बराबरी का भाव बढ़ा है। जाति और धर्म के बंधनों को भी धीरे-धीरे चुनौती दी जा रही है। यह बदलाव सकारात्मक है, क्योंकि यह रिश्तों को न्यायपूर्ण और अधिक मानवीय बना रहा है। मगर साथ ही यह पीढ़ी धैर्य और प्रतीक्षा से भी दूर जा रही है। हर चीज उन्हें तुरंत चाहिए- खाना, प्यार और रिश्ते भी। यही कारण है कि अब टूटते रिश्ते किसी को ज्यादा विचलित नहीं करते। सोशल मीडिया पर 'ब्लाक' और 'अनफ्रेंड' रिश्तों को खत्म करने का सबसे आसान रास्ता बन गए हैं। जहां पहले रिश्ते निभाने के लिए समझौते और त्याग की जरूरत होती थी, वहां अब एक क्लिक से रिश्ता खत्म करना आम हो गया है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने भी रिश्तों की आत्मा को गहराई से प्रभावित किया।उपभोक्तावादी संस्कृति ने भी

रिश्तों की आत्मा को गहराई से प्रभावित किया है। पहले रिश्ते अपनापन और जिम्मेदारी के आधार पर चलते थे। अब वे लाभ-हानि के तराजू में तौले जाने लगे हैं। दोस्ती तब तक है, जब तक काम आ रही है। विवाह तब तक है, जब तक सुख और सुविधा मिल रही है। पड़ोस तब तक है, जब तक उससे कोई फायदा जुड़ा हुआ है। यह मानसिकता रिश्तों को खोखला कर रही है। रिश्ते अब जिम्मेदारी कम और सौदेबाजी ज्यादा लगने लगे हैं। त्योहारों की दुनिया में भी यही बदलाव दिखता है। पहले दीपावली पर घर-घर जाकर मिठइयां बांटी जाती थीं, अब आनलाइन तोहफे का 'वाउचर' भेजना काफी समझा जाता है। होली पर गले मिलने की जगह 'हैप्पी होली' का संदेश भेज देना सामान्य हो गया है। ईद की सेहई और क्रिसमस का केक अब 'वाट्सएप स्टिकर' तक सिमट गया है। त्योहारों की आत्मा रिश्तों की गहराई थी, जो अब बाजार और तकनीक की

चमक में कहीं खोती जा रही है। तस्वीर पूरी तरह अंधेरी नहीं फिर भी तस्वीर पूरी तरह अंधेरी नहीं है। बदलते रिश्तों के इस मौसम ने नई संभावनाएं भी खोली हैं। अंतरजातीय और अंतरधार्मिक विवाहों की स्वीकृति बढ़ रही है। दूरदराज के रिश्तेदार मोबाइल और सोशल मीडिया के जरिए लगातार जुड़े रह सकते हैं। मगर मूल सवाल वही है कि क्या यह सब रिश्तों को जीवित रखने के लिए काफी है? क्या आभासी अपनापन वास्तविक संवेदना की जगह ले सकता है? सच तो यही है कि रिश्ते निभाने के लिए तकनीक से अधिक संवेदना चाहिए। उन्हें जीवित रखने के लिए समय चाहिए, धैर्य चाहिए और सबसे बढ़कर वह मानवीय स्पर्श चाहिए, जिसे कोई मशीन नहीं दे सकती। रिश्तों का मौसम चाहे जैसे भी बदले, उनकी आत्मा वही पुरानी है- विश्वास, अपनापन और जिम्मेदारी। अगर आत्मा बची रही तो रिश्ते बदलते मौसमों में भी हरे-भरे रहेंगे। अगर यह आत्मा खो गई, तो रिश्ते सिर्फ नामों और नंबरों की सूची बनकर रह जाएंगे। आज हमें यही तब करना है कि हम किस मौसम में जीना चाहते हैं- वसंत की गुनगुनाती गरमाहट में या पतझड़ की सूनी उदासी में। यह भी पड़े: विदेशों में बस गए थे, फिर 100 साल पुराने घर ने लौटा दीं जुड़ें, कराईकुड़ी से परिवार और परंपरा की वापसी

हाल ही में तमिलनाडु के शिवगंम जिले के कराईकुड़ी में अपनी जुड़ो से जुड़े रहने की एक घटना चर्चा में आई। यहां एक ही परिवार की पीढ़ियों ने गांव-घर लौटने का मन बनाया। दुनिया के अलग-अलग हिस्से में जा बसे इन लोगों ने व्यस्तता और जीवन की आपाधापी को भूल कर एक-दूजे से मिलने का मार्ग निकाला और अपने पैतृक आवास पर पहुंच गए। पिछले रिश्तों के इस दौर में यह प्रयास पीढ़ियों को जोड़ने की एक प्रेरणादायी घटना है।

लक्ष्य से दूर कार्बन उत्सर्जन पर लगाम, भारत की अपनी चिंताएं और चुनौतियां

धरती का तापमान न बढ़े, इसके लिए कवायद तो हो रही है, लेकिन दुनिया भर के देशों की वर्तमान नीतियां ऐसी हैं जो तापमान को 2.3 से 2.5 डिग्री तक ले जा सकती हैं। हालांकि कई देशों ने नवीकरणीय ऊर्जा पर जोर दिया है। फिर भी 29 देशों में कार्बन उत्सर्जन उच्च स्तर पर बना हुआ है। दूसरी ओर, भारत कम उत्सर्जन के साथ मध्यम प्रदर्शन कर रहा है। ‘कार्बन मार्केट वाच’ की रपट बताती है कि वर्तमान समय में विश्व के कई बड़े देश जलवायु परिवर्तन रोकने में सफल नहीं रहे हैं। लिहाजा 1.5 डिग्री तापमान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्बन उत्सर्जन में 43 फीसद की कमी लाने की जरूरत है। मगर इसकी उमीद अभी नहीं दिख रही है। कई बड़े उद्योगों का कामकाज

जलवायु लक्ष्यों के अनुकूल नहीं है। सच यह है कि वैश्विक तापमान बढ़ने से रोकने के प्रयास अपर्याप्त हैं। पिछले जी-20 सम्मेलन में शामिल देशों में वर्ष 2050 तक पृथ्वी के तापमान में बढ़ोतरी को डेढ़ डिग्री तक रखने पर सहमति बनी थी। यह अच्छी बात है कि इस वर्ष का केंद्रीय बजट ऊर्जा परिवर्तन को बढ़ावा देता है। मगर यह भी सच है कि भारत के विकास लक्ष्यों के साथ जलवायु अनुकूलन का तालमेल स्थापित करने में कहीं न कहीं कमी रह जाती है। गौरालब है कि वर्ष 2022 में भारत ने कई महीनों तक गर्म हवाओं, बाढ़ और चक्रवात जैसी विषम मौसमी घटनाओं का सामना किया था, जिससे जन-जीवन से लेकर लोगों की आजीविका तक प्रभावित हुई। साथ ही

महत्त्व देती है, तो कार्बन उत्सर्जन और अवशोषण की समानता के कारण उत्सर्जन को शून्य स्तर पर ले जाना आसान हो जाएगा। मगर मौजूदा दौर में जिस तरह से पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया जा रहा है, उससे अब शून्य उत्सर्जन के बारे में सोचना समना ही लगता है। फिलहाल दुनिया में केवल दो देश भूटान और सूरीनाम ही हैं, जहां कार्बन उत्सर्जन शून्य है। इसकी वजह वहां कम आबादी और चारों तरफ हरियाली है। महज वादे करने और इरादे जताने भर से इस उत्सर्जन को शून्य पर लाना संभव नहीं है। छोटे-बड़े कई देशों ने संकल्प तो जताया, लेकिन उत्सर्जन रोकने के के ठोस उपाय नहीं किए। नतीजा अब पूरी दुनिया देख रही है। अगर ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन इसी

तरह होता रहा, तो वर्ष 2050 तक पृथ्वी का तापमान दो डिग्री बढ़ जाएगा। यह पूरी दुनिया के लिए भयावह होगा। लोगों को भीषण सूखा से लेकर विनाशकारी बाढ़ का सामना करना पड़ेगा। हिमखंड और अधिक पिघलेंगे। समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा। ऐसे में कई देशों के सामने अस्तित्व का संकट पैदा होगा। दुनिया के 192 देश संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन का हिस्सा हैं। इनमें 137 देश शून्य उत्सर्जन का समर्थन करते हैं। देखा जाए, तो कुल ग्रीनहाउस उत्सर्जन में इनकी हिस्सेदारी 80 फीसद है। इनमें सबसे ज्यादा उत्सर्जन करने वाले चीन और अमेरिका भी इसी में शामिल हैं। चीन ने वर्ष 2026 तक शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है, लेकिन इस मामले में वह कितना खरा

उत्तरेगा, कहना मुश्किल है। दूसरी ओर, जर्मनी और स्वीडन जैसे देश 2045 तक, जबकि ऑस्ट्रिया, फिनलैंड और उत्तर्ग्वे ने अलग-अलग समय में शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है। कई देश वर्ष 2050 तक शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य रखते हैं। अमेरिका के अलावा ऐसे कई देश हैं जो इस मामले में कहीं आगे जाकर वर्ष 2050 तक शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य रखते हैं। इस बीच सुखद यह है कि जलवायु परिवर्तन की इस चुनौती के बीच भारत के वन क्षेत्र में वर्ष 2021 के दौरान तीन फीसद से अधिक बढ़ोतरी हुई। वैसे भारत जलवायु परिवर्तन को लेकर दूसरे देशों के मुकाबले कहीं अधिक चिंतित है। इस समय वह नवीकरणीय ऊर्जा पर विशेष जोर दे रहा है।

संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (काप-26) में भारत ने इस मामले में अपना पक्ष रखा था। अभी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वर्ष 2030 तक गैर जीवाश्म ऊर्जा को किसी भी तरह कम किया जाए। दूसरा यह कि अपनी 50 फीसद ऊर्जा जरूरतों को नवीकरणीय ऊर्जा से कैसे पूरा किया जाए। वहीं कार्बन उत्सर्जन को भी कम करते जाना है। इसके अलावा, वर्ष 2070 तक शून्य उत्सर्जन हासिल करने का लक्ष्य तो है ही। हालांकि समय की कसौटी पर कौन कितना खरा उत्तरेगा, यह तो समय ही बताएगा, लेकिन कार्बन उत्सर्जन से पर्यावरण को कितना नुकसान हुआ है, यह अब पूरी दुनिया में दिखने लगा है। वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में हरित विकास जोर

दिया गया है। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत को स्वच्छ ऊर्जा में अग्रणी बनाना और वर्ष 2030 तक गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता हासिल करना है।बजट में नवीकरणीय ऊर्जा के लिए भी बड़ी राशि आबंटित की गई है और ग्रीन हाइड्रोजन, इलेक्ट्रॉनिक वाहनों के अलग-अलग हिस्से में जा बसे इन लोगों ने व्यस्तता और जीवन की आपाधापी को भूल कर एक-दूजे से मिलने का मार्ग निकाला और अपने पैतृक आवास पर पहुंच गए। पिछले रिश्तों के इस दौर में यह प्रयास पीढ़ियों को जोड़ने की एक प्रेरणादायी घटना है।

यह बात समझ से बाहर है कि इस संस्थान को चीन के बनाए ‘रोबोटिक ड्राग’ को अपना नवाचारी उत्पाद बता कर पेश करने की क्या जरूरत थी? हू सम्मेलन में उपस्थित उसके प्रतिनिधि ने क्या सोच कर इस संबंध में अतिरेक से भरे और झूठे दावे किए?

आमतौर पर झूठे दावों की हकीकत किसी न किसी रूप में सामने आ जाती है, लेकिन कई बार उसके नतीजे गंभीर होते हैं। दिल्ली में आयोजित ‘एआइ इम्पैक्ट सम्मेलन’ में हिस्सा लेने वाले गलगोटिया यूनिवर्सिटी के एक झूठ से न केवल उसकी फजीहत हुई, बल्कि इस आयोजन में बरती जाने वाली कोताही भी नहीं चाहिए थी। यह बात समझ से बाहर है कि इस संस्थान को चीन के बनाए ‘रोबोटिक ड्राग’ को अपना नवाचारी उत्पाद बता कर पेश करने की क्या जरूरत थी?हू सम्मेलन में उपस्थित उसके प्रतिनिधि ने क्या सोच कर इस संबंध में अतिरेक से भरे और झूठे दावे किए? अव्वल तो भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर केंद्रित अंतरराष्ट्रीय स्तर के आयोजन की गरिमा को ध्यान में रखते हुए इस तरह के फर्जी और अनैतिक दावे करने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए था। दूसरे, ऐसा करते हुए एक बार भी इस बात का ध्यान रखना जरूरी नहीं समझा गया कि जिस तरह की तकनीक के बारे में झूठा दावा किया गया, आज इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में उस झूठ को सामने आने में ज्यादा वक़्त नहीं लगता है। आखिर विवाद बढ़ने के बाद संस्थान को माफी मांगनी पड़ी, लेकिन इससे उसकी विश्वसनीयता पर

गलगोटिया यूनिवर्सिटी के ‘चाइनीज रोबोटिक डॉग’ ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर कराई फजीहत



गंभीर असर पड़ा है। इस विवाद को गंभीरता से लेते हुए सरकार ने उचित ही सम्मेलन से वह स्थल खाली करने के कहा गया, जहां इस निजी विश्वविद्यालय ने अपनी प्रदर्शनी लगाई थी। इस बात की पूरी संभावना है कि एआइ सम्मेलन में प्रदर्शित करने के लिए आए तमाम उपादों को मंजूरी पहले ही दी गई होगी। सवाल उठता है कि इस सम्मेलन में संस्थानों की जब अपने मौलिक एआइ उपकरणों को प्रस्तुत करने के लिए बुलाया गया होगा, तब गलगोटिया की ओर से ऐसे दावे किए गए दावों को लेकर आयोजकों की ओर से शुरू में ही जरूरी सवाल क्यों नहीं किए गए? आज जब देश कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां हासिल करने की जमीन

खासतौर पर हमारे देश में बलात्कार जैसे गंभीर अपराधों के मामले में न केवल इस अपराध की प्रकृति, बल्कि उसका पीड़िता के मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभावों को ध्यान में रखते हुए बेहद संवेदनशील रुख अपनाते की जरूरत होती है, लेकिन कई बार इन तकाजों को प्राथमिक नहीं माना जाता

आधी आबादी का हक, न्यायिक व्याख्या और नारी गरिमा का प्रश्न

महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों की सुनवाई और फैसले की दिशा इस बात पर निर्भर करती है कि न्यायालय में पीड़िता के पक्ष पर कितनी संजीदगी के साथ गौर किया गया। खासतौर पर हमारे देश में बलात्कार जैसे जघन्य अपराधों के मामले में न केवल इस अपराध की प्रकृति, बल्कि उसका पीड़िता के मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभावों को ध्यान में रखते हुए बेहद संवेदनशील रुख अपनाने की जरूरत होती है, लेकिन कई बार इन तकाजों को प्राथमिक नहीं माना जाता।मगर अब सर्वोच्च न्यायालय ने इस संदर्भ में एक जरूरी मानक सामने रखा है कि निचली अदालतों में बलात्कार के मामलों पर सुनवाई करते हुए कितना संवेदनशील होने की जरूरत है। गौरतलब है कि पिछले वर्ष मार्च में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने अपने फैसले में एक नाबालिग लड़की पर यौन इरादे से शारीरिक बलप्रयोग को बलात्कार के प्रयास का अपराध नहीं माना और आरोपी को हल्का करार दिया। उस समय यी अदालत के रुख और उसकी टिप्पणियों पर तीखे सवाल उठे थे।अब सुप्रीम कोर्ट ने जिस तरह इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस फैसले को रद्द कर दिया, उससे एक बार फिर महिलाओं की गरिमा और अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायिक व्यवस्था के प्रति भरोसा मजबूत हुआ है। दरअसल, इलाहाबाद हाई कोर्ट ने संबंधित मामले में

बलात्कार से संबंधित कानून के प्रावधानों की विचित्र व्याख्या करके आरोपियों के प्रति जिस तरह नरम रुख अख्तियार किया था, वह अपने आप में न्याय की प्रक्रिया पर एक गंभीर सवाल था।खासतौर पर एक नाबालिग लड़की पर तीन युवकों के शारीरिक बलप्रयोग, बदतमीजी और उसकी गरिमा को चोट पहुंचाने की जिस स्तर पर अनदेखी की गई और आरोप की गंभीरता को कम किया गया, उस पर खुद सुप्रीम कोर्ट ने भी गहरी नाराजगी जताई थी। बीते वर्ष 25 मार्च को शीर्ष अदालत की पीठ ने साफ शब्दों में कहा था कि यह फैसला पूरी तरह से असंवेदनशील और अमानवीय नजरिए को दिखाता है, इसलिए इस पर रोक जरूरी है। अब उसी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट को फटकार लगाई और उसके विवादित फैसले को पलटते हुए ‘बलात्कार का प्रयास’ करार दिया। अब यह मुकदमा गंभीर अपराध और अमानवीय अधिनियम के सख्त प्रावधानों के तहत चलेगा। निश्चित रूप से सुप्रीम कोर्ट की यह रुख महिलाओं के खिलाफ जघन्य अपराधों की रोकथाम और खासतौर पर अदालतों में बलात्कार जैसे गंभीर अपराध की सुनवाई के क्रम में कभी-कभार बरती जाने वाली असंवेदनशीलता के मद्देनजर बेहद अहम है। सवाल है कि ऐसे मामलों में कानूनी प्रावधानों की व्याख्या करते हुए

अपराध की प्रकृति, पीड़िता की स्थिति और सामाजिक हकीकतों को ध्यान में रखना जरूरी क्यों नहीं समझा जाना जबाब अदालतों की ओर से ऐसे मामलों में जरूरी संवेदनशीलता के तकाजों की अनदेखी की जाती है, तब यौन अपराधों के विरुद्ध महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के प्रयास कमजोर होते हैं। शायद इन्हीं वजहों से सुप्रीम कोर्ट ने अब यौन अपराधों और अन्य संवेदनशील मामलों के संदर्भ में न्यायाधीशों के दृष्टिकोण और न्यायिक प्रक्रिया में संवेदनशीलता तथा करुणा पैदा करने के लिए दिशानिर्देश तैयार करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी को एक समिति गठित करने को कहा है।यह इसलिए भी जरूरी पहल है कि न्याय की उमीद अभी पूरी हो सकती है, जब न्यायाधीशों के भीतर पीड़ित की वास्तविक स्थितियों के प्रति जरूरी संवेदनशीलता, करुणा और समझ की भावना हो।घर से लेकर कार्यस्थल तक और यहां तक कि सार्वजनिक जगहों पर भी कुछ लोग स्त्रियों की गरिमा और आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाने से बाज नहीं आते। नैतिक और सामाजिक मूल्यों की इस गंभीर क्षति को रोकने का प्रयास कम ही दिखता है। मगर पिछले दिनों दिल्ली की जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित संगीत कार्यक्रमों में महिलाओं को परेशान किए जाने की घटना को पंजाबी गायिका जैसमीन सैडलस ने गंभीरता से लिया।



भारत-पाकिस्तान मैच ने तोड़े डिजिटल व्यूअरशिप रिकॉर्ड, जियोहॉटस्टार पर 16.3 करोड़ यूजर्स ने देखा

नई दिल्ली। भारत-पाकिस्तान के हाई-वोल्टेज मुकाबले ने व्यूअरशिप के सभी पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर इस मैच को 16.3 करोड़ यूजर्स ने देखा। यह टी20 फॉर्मेट में किसी भी आईसीसी इवेंट के लिए एक मैच की सबसे ज्यादा रीच है।

यह मैच 15 फरवरी को कोलंबो के आर प्रेमदासा स्टेडियम में खेला गया था। इस मैच को 20 बिलियन मिनट देखा गया है। इतना ही नहीं इसने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर 2024 झ20 वर्ल्ड कप फाइनल मैच को भी पीछे छोड़ दिया है। यह फाइनल मैच भारत और साउथ अफ्रीका के बीच खेला गया था।

मोबाइल पर यह मैच लीग स्टेज का सबसे ज्यादा देखा गया मुकाबला बना। सभी प्लेटफॉर्म मिलाकर कुल 20 अरब मिनट का वॉच टाइम रिकॉर्ड हुआ, जो पिछले संस्करण की तुलना में 42% ज्यादा है।

2024 के भारत-पाकिस्तान मैच



की तुलना में भी डिजिटल रीच में 56% की बढ़ोतरी दर्ज की गई। जियोहॉटस्टार बोला- टी-20 वर्ल्ड कप के लिए जुनून का सबूत जियोहॉटस्टार के स्पॉटर्स सेल्स हेड अनूप गोविंदन ने कहा कि यह रिकॉर्ड दर्शकों के जबरदस्त जुड़ाव को

दिखाता है। वहीं कंटेंट हेड सिद्धार्थ शर्मा ने इसे देश के टी-20 वर्ल्ड कप के लिए जुनून का सबूत बताया। भारत ने जीत के साथ टी20 वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के खिलाफ अपना रिकॉर्ड 8-1 कर लिया है। वहीं, भारत अब सुपर-8 में पहुंच चुका है और

21 फरवरी से शुरू हो रहे अगले चरण में खिताब बचाने की चुनौती के साथ उतरेगा।

सुपर-8 में 12 मैच होंगे, 3 दिन डबल हेडर सुपर-8 स्टेज में 4-4 टीमों के 2 ग्रुप बनेंगे। हर टीम अपने ग्रुप में एक-दूसरे के खिलाफ 3-3 मैच खेलेगी। यानी एक ग्रुप में 6 मैच होंगे। इस तरह दोनों ग्रुप मिलाकर 12 मुकाबले खेले जाएंगे। दोनों ग्रुप की 2-2 टॉप टीमें अगले राउंड में एंट्री करेंगी। सुपर-8 स्टेज में 22 और 26 फरवरी के साथ 1 मार्च को 2-2 मैच खेले जाएंगे। 20 से 28 फरवरी तक बाकी दिन 1-1 मैच ही होगा।

4 मार्च को पहला सेमीफाइनल होगा, वहीं 5 मार्च को वानखेड़े स्टेडियम में दूसरा सेमीफाइनल खेला जाएगा। इन्हें जीतने वाली टीम 8 मार्च को फाइनल में भिड़ेगी। अगर पाकिस्तान ने नॉकआउट राउंड में एंट्री की तो उसके सभी मैच कोलंबो में होंगे।

उन्होंने अफगानिस्तान क्रिकेट के लिए बहुत कुछ किया है, कोच ट्रॉट की विदाई पर बोले कप्तान राशिद

नई दिल्ली। अफगानिस्तान ने टी20 वर्ल्ड कप 2026 का अंत धमकेदार जीत के साथ किया। गुरुवार को एम चिंदबरम के मैदान पर खेले गए टूर्नामेंट के 39वें मुकाबले में अफगानिस्तान ने कनाडा को 82 रनों से हराया। अफगानिस्तान ने जीत के साथ टीम के हेड कोच जोनाथन ट्रॉट को भी विदाई दी। कप्तान राशिद खान ने मैच के बाद कहा कि ट्रॉट ने अफगानिस्तान क्रिकेट के लिए बहुत कुछ किया और उनका टीम से अलगा होना काफी भावुक करने वाला पल है। कनाडा के खिलाफ मिली जीत के बाद राशिद ने कोच की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा, 'जोनाथन ट्रॉट के साथ पिछले चार या साढ़े चार साल का यह सफर कमाल का रहा। उन्होंने



अफगानिस्तान क्रिकेट के लिए बहुत कुछ किया। टीम को इस मुकाम तक पहुंचाने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई। ट्रॉट को इस तरह से टीम से अलग होते देखना काफी भावुक पल है, लेकिन यहीं जिंदगी है। आप कभी भी हमेशा साथ नहीं रह सकते हैं। हम

उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं देना चाहते हैं और उम्मीद करते हैं कि उनसे फिर मुलाकात होगी।'

अफगानिस्तान के टूर्नामेंट में सफर को लेकर राशिद ने कहा, 'हम पूरी तैयारी के साथ आए थे और हमने टूर्नामेंट में लाजवाब क्रिकेट खेला। मेरे

हिसाब से साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेले गए मैच में मिली हार ने हमको बैकफुट पर धकेल दिया और सबसे ज्यादा चोट भी पहुंचाई। हम इस बात को जानते थे कि विश्व कप में अपने भाग्य को नियंत्रण में रखने के लिए हमें शुरुआती दो मैचों में से एक में जीत दर्ज करनी ही होगी। हालांकि, टूर्नामेंट ऐसे ही चलता है।'राशिद ने आगे कहा, 'इस टूर्नामेंट से हमारे लिए काफी चीजें सकारात्मक रहें, जिसके साथ हम आगे बढ़ना चाहेंगे और अगले आईसीसी इवेंट में मजबूती के साथ वापसी करेंगे। हालांकि, कुछ चीजों में हमें सुधार करने की जरूरत है। सातहरी पर बड़ी टीमों के खिलाफ हमारे मध्यक्रम बल्लेबाजों का प्रदर्शन और अंतिम ओवरों में गेंदबाजी।

भारतीय विमेंस टीम 17 रन से दूसरा टी-20 हारी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 7 रन के अंदर 6 विकेट गंवाए

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया ने इंडिया विमेंस को 17 रन से दूसरा टी-20 हरा दिया। गुरुवार को कैनबरा में खेले गए मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने 163 रन बनाए। जवाब में टीम इंडिया 9 विकेट खोकर 144 रन ही बना सकी। ऑस्ट्रेलिया के लिए जॉर्जिया वॉल ने सबसे ज्यादा 88 रन बनाए। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। वॉल ने मूनी के साथ मिलकर पहले विकेट लिए 128 रन जोड़े और ऑस्ट्रेलिया की जीत की नींव रखी। भारत ने टॉस जीतकर ऑस्ट्रेलिया को पहले बल्लेबाजी के लिए बुलाया। ऑस्ट्रेलिया को दोनों ओपनर्स जॉर्जिया वॉल और बेथ मूनी ने अच्छी शुरुआत दिलाई। दोनों ने शतकीय साझेदारी करते हुए पहले विकेट के लिए 128 रन जोड़े।15वें ओवर में ऑस्ट्रेलिया ने बिना विकेट खोए 128 रन बना लिए थे। ऐसा लग रहा था कि ऑस्ट्रेलिया 180 या 190 के स्कोर तक पहुंच सकती है, लेकिन इसके बाद भारतीय गेंदबाजों ने



वापसी करते हुए ऑस्ट्रेलिया को 5 विकेट पर 163 रन के स्कोर पर रोक दिया।

ऑस्ट्रेलिया से वॉल ने 57 गेंदों पर 88 रन बनाए, जिसमें 11 चौके और एक छक्का शामिल रहा। वहीं मूनी ने 39 गेंदों पर 46 रन बनाए।

भारत के लिए अरुंधति रेड्डी ने सबसे ज्यादा 2 विकेट लिए। जबकि रेणुका ठाकुर को 1 विकेट मिला। ऑस्ट्रेलिया की दो बैटर्स रन-आउट हुईं।भारतीय पारी अच्छी शुरुआत के बाद पटरी से उतरी 164 रन के टारगेट का पीछा करते हुए भारत ने

तेज शुरुआत की।

दोनों ओपनर्स शोफाली वर्मा और स्मृति मंधाना ने पावरप्ले में बिना विकेट खोए 54 रन बना दिए। भारत ने 7वें ओवर में 57 रन पर शोफाली का विकेट गंवाया और 10वें ओवर तक स्कोर 71 रन पर 3 विकेट हो गया।

कप्तान हरमनप्रीत कौर और ऋचा घोष ने फिर चौथे विकेट के लिए 55 रन की पार्टनरशिप की, लेकिन इस पार्टनरशिप के टूटते ही भारत ने अगले 7 रन के अंदर 6 विकेट गंवा दिए।हरमन ने 36 रन बनाए भारत के लिए कप्तान हरमनप्रीत ने सबसे ज्यादा 36 रन की पारी खेली। वहीं स्मृति ने 31 और शोफाली ने 29 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया के लिए एश्ले गार्डनर ने सबसे ज्यादा 3 विकेट लिए।

उनके अलावा किम गार्थ, एनाबेल सदरलैंड और सोफी मोलेन्यू ने 2-2 विकेट लिए।

मानसा में रोमांचक क्रिकेट प्रतियोगिता, अजय कुमार सरमेघा की टिप्पणी बनी विशेष आकर्षण

नई दिल्ली। मानसा में बाबा दीप सिंह खेल एवं कल्याण क्लब द्वारा आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता खेल प्रेमियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। इस प्रतियोगिता में देश के विभिन्न राज्यों से आई टीमों ने भाग लिया, जिससे मुकाबले अत्यंत रोमांचक और उच्च स्तर के देखने को मिले। प्रतियोगिता के दौरान प्रसिद्ध उद्योगिक अजय कुमार सरमेघा की जोशीली और प्रभावशाली टिप्पणी ने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। उनकी ऊर्जावान आवाज ने मैदान में उपस्थित दर्शकों के साथ-साथ दूर बैठे श्रोताओं को भी हर गेंद के साथ जोड़े रखा।भूख, मुश्किलें, ताने – सब सहकर भी मुकुणय्या हैं,



मैं सरमेघा का बेटा हूँ, आवाज से इतिहास बनाया हूँ। अजय कुमार सरमेघा का जन्म 18 फरवरी 1992 को सरमेघा गांव, जिला रियासी, जम्मू और कश्मीर में हुआ। बचपन से ही क्रिकेट वर्णन का शौक रखने वाले अजय कुमार ने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वर्षों तक संघर्ष किया। प्रारंभिक समय में उनके मित्र और रिश्तेदार श्री जगदीश ने उनका भरपूर साथ दिया। अनेक अवसरों पर उन्होंने निःशुल्क वर्णन किया, परंतु अपने स्वप्न से कभी पीछे नहीं हटे। उन्होंने कई प्रसिद्ध खिलाड़ियों के साक्षात्कार भी किए हैं, जिनमें अभिषेक शर्मा, अरुंधीत सिंह, वैभव

अरोड़ा तथा नवदीप सैनी जैसे नाम शामिल हैं। इस अवसर पर मानसा में क्रिकेट के संस्थापक जतिंदर अग्रवाल ने अजय कुमार सरमेघा की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे उद्योगिक खिलाड़ियों में उत्साह और आत्मविश्वास का संचार करते हैं, जिससे खेल का स्तर और भी ऊंचा हो जाता है तथा दर्शकों में रोमांच बना रहता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मानसा की धरती आगे भी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करती रहेगी। निश्चित रूप से अजय कुमार सरमेघा की आवाज भविष्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान स्थापित करेगा

व्यापार

एआई कंटेंट पर लेबल जरूरी, नए नियम लागू

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को डीपफेक फोटो-वीडियो 3 घंटे में हटाने होंगे

अगर कोई फोटो, वीडियो या ऑडियो एआई की मदद से बनाया गया है, तो उस पर 'लेबल' लगाना जरूरी कर दिया गया है। इसके साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को किसी भी आपत्तिजनक कंटेंट को शिकायत मिलने के महज 3 घंटे के भीतर हटाना होगा। ये नए नियम 20 फरवरी 2026 से लागू हो गए हैं। 10 फरवरी को इसका नोटिफिकेशन जारी हुआ था।

पीएम बोले- कंटेंट पर 'ऑथेंटिसिटी लेबल' की जरूरत

इन नियमों के लागू होने से एक दिन पहले यानी, 19 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने.हु समिट में भी लेबल को लेकर सुझाव दिया था। उन्होंने कहा था कि जैसे खाने के सामान पर 'न्यूट्रिशन लेबल' होता है, वैसे ही डिजिटल कंटेंट पर भी लेबल होना चाहिए। इससे लोगों को पता चल सकेगा कि क्या असली है और क्या फैब्रिकेटेड, यानी एआई से बनाया गया है।



'डिजिटल स्टैम्प'

जैसे खाने के पैकेट पर लिखा होता है कि वह 'शाकाहारी' है या 'मांसाहारी', ठीक वैसे ही अब हर एआई वीडियो, फोटो या ऑडियो पर एक लेबल लगा होगा।

मान लीजिए आपने एआई से एक वीडियो बनाया जिसमें कोई नेता भाषण

दे रहा है, तो उस वीडियो के कोने में साफ लिखा होना चाहिए- एआई जनरेटED'।

टेक्निकल मार्कर: डिजिटल डीएनए

मेटाडेटा को आप उस फाइल का 'डिजिटल डीएनए' मान सकते हैं। यह स्क्रीन पर तो नहीं दिखता, लेकिन

फाइल की कोडिंग के अंदर छिपा होता है।

इसमें यह जानकारी दर्ज होगी कि यह फोटो या वीडियो किस तारीख को बना, किस एआई टूल से बना और किस प्लेटफॉर्म पर पहली बार अपलोड हुआ। अगर कोई एआई का इस्तेमाल करके अपराध करता है, तो पुलिस इस 'टेक्निकल मार्कर' के जरिए उसके असली सोर्स तक पहुंच सकेगी।

छेड़छाड़ पर रोक: मिटाना नहीं जा सकेगा लेबल

पहले लोग एआई से बनी फोटो का कोना काटकर या एडिटिंग करके उसका 'वॉटरमार्क' हटा देते थे ताकि वह असली लगे। अब सरकार ने इसे गैर-कानूनी बना दिया है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को ऐसी तकनीक अपनानी होगी कि अगर कोई उस लेबल या मेटाडेटा को हटाने की कोशिश करे, तो या तो वह कंटेंट ही डिलीट हो जाए।

सेंसेक्स 316 अंक चढ़कर 82,814 पर बंद, निफ्टी में 117 अंकों की तेजी, 25,571 पर पहुंचा

नई दिल्ली। संसेक्स शुक्रवार 20 फरवरी को 316 अंक (0.38%) चढ़कर 82,814 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी भी 117 अंक (0.46%) चढ़ा। ये 25,571 के स्तर पर पहुंच गया। आज के कारोबार में मेटल और सरकारी बैंकों के शेयरों में खरीदारी है। आईटी में गिरावट है।

एशियाई मार्केट में मिला-जुला कारोबार

जापान का निक्केई इंडेक्स

1.12% गिरकर 56,825 के स्तर पर बंद हुआ। दक्षिण कोरिया का कोस्पी 2.31% चढ़कर 5,808 के स्तर पर बंद हुआ। हॉंगकॉंग का हैंगसेंग इंडेक्स 1.10% अंक गिरकर 26,413 पर है। चीन का शंघाई कपोजिट इंडेक्स 14 फरवरी से बंद है। विदेशी निवेशकों ने 1,154 करोड़ रुपए के शेयर खरीदे

विदेशी निवेशकों ने 19 फरवरी को 880 करोड़ रुपए के शेयर बेचे। घरेलू संस्थागत निवेशकों ने 596 करोड़ रुपए के शेयर बेचे। इस महीने यानी फरवरी में अब तक फिल्स ने 1,076 करोड़ रुपए के शेयर बेचे हैं। इस दौरान डिल्स ने 11,474 करोड़ रुपए के शेयर खरीदे। जनवरी 2026 में फिल्स ने कुल 741,435 करोड़ के शेयर्स बेचे थे। इस दौरान डिल्स ने 769,220 करोड़

के शेयर खरीदे थे। रिन्यूएबल एनर्जी कंपनी क्लीन मैक्स एनवायरन एनर्जी सॉल्यूशंस अपना इनिशियल पब्लिक ऑफर 23 फरवरी को खुलेगा। निवेशक 25 फरवरी तक इसमें बोली लगा सकेंगे। कंपनी इस आईपीओ के जरिए 3,100 रुपए जुटाना चाहती है। कंपनी इस इश्यू के जरिए फ्रेश शेयर और ऑफर फॉर सेल दोनों लेकर आ रही है।

सरकार ने देश के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सात नई पहल की घोषणा की है, जिनमें ई-कॉमर्स निर्यातकों के लिए क्रेडिट सहायता और वैकल्पिक व्यापार वित्त साधनों को समर्थन शामिल है। ये कदम 25,060 करोड़ रुपये के निर्यात प्रोत्साहन मिशन के तहत उठाए गए हैं, जिसके 10 घटकों में से तीन को पहले ही जनवरी में लागू किया जा चुका है।

सरकार की घोषित सात प्रमुख पहलें इस प्रकार हैं:

डायरेक्ट ई-कॉमर्स क्रेडिट फैसिलिटी- ई-कॉमर्स निर्यातकों को 50 लाख रुपये तक की सहायता, 90% गारंटी कवरेज के साथ।

ओवरसीज इन्वेंट्री क्रेडिट फैसिलिटी- विदेश में स्टॉक रखने के लिए 5 करोड़ रुपये तक सहायता,



75% गारंटी और 2.75% ब्याज सब्सिडी।

एक्सपोर्ट फैक्टरिंग पर ब्याज सब्सिडी- एमएसएमई के लिए सरती कार्यशील पूंजी हेतु फैक्टरिंग लागत पर

2.75% ब्याज सहायता (सीमा 50 लाख रुपये सालाना)।

उच्च जोखिम/नए बाजारों के लिए ट्रेड फाइनेंस सपोर्ट- लेटर ऑफ क्रेडिट कन्फर्मेशन और नेगोशिएशन जैसे

क्रेडिट एन्हांसमेंट साधनों को समर्थन।

ट्रेस (ट्रेड रेगुलेशन, एंक्नेडिशन एंड कम्प्लायंस एनेबलमेंट)- अंतरराष्ट्रीय ट्रेडिंग, सर्टिफिकेशन और अनुपालन खर्च पर 60% से 75% तक प्रतिपूर्ति (सीमा 25 लाख रुपये प्रति आईईसी)।

फ्लो (लॉजिस्टिक्स, ओवरसीज वेयरहाउसिंग एंड फुलफिलमेंट)- विदेशी वेयरहाउसिंग, ई-कॉमर्स एक्सपोर्ट हब और ग्लोबल वितरण नेटवर्क तक पहुंच के लिए परियोजना लागत का 30% तक समर्थन।

लिफ्ट और इनसाइट सपोर्ट- दूरदराज/पहाड़ी क्षेत्रों के निर्यातकों को फ्रेट पर 30% तक सहायता और ट्रेड इंटेलिजेंस व फैसिलिटेशन परियोजनाओं के लिए 50% तक वित्तीय सहयोग।

मानवाधिकार आयोग अध्यक्ष ने नवग्रह शक्ति पीठ पर की पूजा अर्चना

- निर्माणाधीन अस्पताल भवन, जेल व अपना घर का भी निरीक्षण किया

ग्वालियर। मध्य प्रदेश मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष डॉ. अवधेश प्रताप सिंह डबरा प्रवास के दौरान नवग्रह शक्तिपीठ मंदिर परिसर में आयोजित हो रहे धार्मिक आयोजन में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने नवग्रह शक्ति पीठ के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष को मंदिर परिसर का भ्रमण कराया। इस दौरान पुलिस उप महानिरीक्षक मुकेश श्रीवास्तव एवं आयोग मित्र डॉ. दीपक शर्मा (शिकायत प्रकोष्ठ, ग्वालियर-चंबल संभाग) भी उनके साथ थे। मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष डॉ. सिंह ने कहा कि ऐसे आध्यात्मिक केंद्र समाज में सकारात्मक ऊर्जा और सांस्कृतिक चेतना को मजबूत करते हैं।

राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष डॉ. अवधेश प्रताप सिंह ने



डबरा प्रवास के दौरान शासकीय अस्पताल, उप जेल एवं 'अपना घर' आश्रम का निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से कहा कि किसी भी संस्था में मानवाधिकारों से जुड़ी लापरवाही न हो। डॉ. सिंह ने शासकीय अस्पताल, उप जेल एवं 'अपना घर' आश्रम का दौरा कर व्यवस्थाओं की जमीनी हकीकत

जानी। मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष डॉ. सिंह ने डबरा में निर्माणाधीन अस्पताल के नए भवन के बारे में जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि अस्पताल भवन का निर्माण कार्य जल्द से जल्द पूर्ण कराएं, जिससे मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें। इसी क्रम में मानवाधिकार आयोग के

अध्यक्ष डॉ. अवधेश प्रताप सिंह ने उप जेल डबरा का भ्रमण किया। यहां साफसफाई व अन्य सुविधाओं का जायजा लेने के बाद उन्होंने बंदियों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याएं जानीं। 'अपना घर' आश्रम का भी मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष ने जायजा लिया। उन्होंने यहां की व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त किया और संस्था के कार्यों की सराहना की। डॉ. सिंह ने इस संस्था को मानव सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। निरीक्षण के समय मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सचिन श्रीवास्तव, एसडीएम रूपेश सिंहवाड़ी, आयोग मित्र डॉ. दीपक शर्मा, नायब तहसीलदार मस्तराम गुर्जर, नायब तहसीलदार लाल सिंह राजपूत, सहायक जेल अधीक्षक महेश शर्मा, समाजसेवी संग्राम सिंह सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

प्रथमिकता के साथ समय पर हो मुख्य मार्गों की सफाई: निगमायुक्त

ग्वालियर। शहर के मुख्य मार्गों पर कचरे ढेर नहीं मिलना चाहिए तथा डोर टू डोर वाहन समय पर निर्धारित रूट पर ही चले एवं स्वच्छता ऐप पर आने वाली शिकायतों को प्राथमिकता के साथ निराकरण करायें। यह निर्देश निगम आयुक्त संघ प्रिय ने स्वास्थ्य विभाग की बैठक लेकर संबंधित अधिकारियों को दिए। बैठक में अपर आयुक्त टी. प्रतीक राव, उपायुक्त मुकेश बंसल, मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. वैभव श्रीवास्तव, स्वास्थ्य अधिकारी, सहायक स्वास्थ्य अधिकारी, जेडएचओ एवं डब्ल्यूएचओ उपस्थित थे।

बाल भवन के सभागार में आयोजित बैठक में निगमायुक्त संघ प्रिय ने स्वच्छता के कार्य में लगे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को



निर्देशित किया कि प्रथमिकता के साथ मुख्य मार्गों की सफाई समय पर हो, कहीं भी मुख्य मार्ग या उसके किनारे पर कचरा मिला तो संबंधित के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी तथा ड्रिवाइडारों पर कचरे ढेर नहीं मिले। इसके साथ ही रोड स्वीपिंग मशीन प्रोपर समय पर

तथा प्रतिदिन चले कहीं भी सड़क पर धूल नहीं मिलना चाहिए। डोर टू डोर वाहनों की मॉनिटरिंग के लिए कंट्रोल कमांड सेंटर में कर्मचारियों की नियुक्ति की गई है। अगर वाहन निर्धारित रूट पर नहीं चल रहा है या एक स्थान पर काफी देर तक रुका है तो उसकी

सूचना संबंधित डोर टू डोर वाहन चालक कंट्रोल कमांड सेंटर पर दें। बैठक में निर्देशित किया गया कि डेयरी संचालकों पर प्रभावी कार्यवाही करें, अगर किसी डेयरी संचालक की बजह से कहीं भी सीवर चौक होती है तो संबंधित के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। शहर में स्थित सभी शौचालयों एवं मूत्रालयों की वास्तविक स्थिति देखें, अगर कहीं रिपेयर होना है तो उनको ठीक करायें तथा शौचालयों की सफाई प्रोपर समय पर हो इसका संबंधित अधिकारी विशेष ध्यान रखें। इसके साथ ही शहर में स्थित पार्कों की सफाई भी प्रतिदिन हो इसका विशेष ध्यान रखें। इसके साथ ही बैठक में अनुपस्थित रहने वाले जेडएचओ एवं डब्ल्यूएचओ को नोटिस जारी किये गये हैं।

विभागीय अधिकारी सक्षम स्वीकृति के लिये प्रकरण ई-ऑफिस से भेजें: निगमायुक्त

- 60 से अधिक अधिकारियों ने ई-ऑफिस पोर्टल पर कराया पंजीयन

ग्वालियर। मध्यप्रदेश शासन के सभी विभागों में ई-फाइल की व्यवस्था लागू की गई है। इस व्यवस्था के तहत अब सभी विभागों में फाइलों का मूमेंट इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से प्रारंभ हो गया है। प्रशासन के साथ-साथ नगर निगम ग्वालियर में भी ई-ऑफिस प्रणाली को लागू किया गया है। नगर निगम ग्वालियर के 60 से अधिक अधिकारियों ने ई-ऑफिस पोर्टल पर जाकर न केवल अपना पंजीयन करा लिया है बल्कि ई-ऑफिस के माध्यम से कार्य भी प्रारंभ कर दिया है।



निगम आयुक्त संघ प्रिय ने नगर निगम के सभी क्षेत्राधिकारी, विभागीय अधिकारी, नोडल अधिकारी, कार्यपालन यंत्री, सहायक यंत्री सहित अन्य ऐसे सभी अधिकारियों को जो फाइल मूमेंट करते हैं उन्हें ई-ऑफिस के माध्यम से ही फाइलों का मूमेंट करने

के निर्देश दिए हैं। निगम आयुक्त संघ प्रिय ने नगर निगम के सभी अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे अपने विभाग के ऐसे सभी अधिकारियों को ई-ऑफिस पर जाकर पंजीयन करा लें जो फाइल मूमेंट करते हैं। निगम के जिन अधिकारियों ने अभी भी ई-ऑफिस पर अपना पंजीयन नहीं कराया है वे तीन दिवस के अंदर अपना पंजीयन कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि सभी अधिकारी अपने विभाग के विभिन्न पत्रों, छुट्टी के आवेदनों, छोटी फाइलों का मूमेंट वरिष्ठ अधिकारियों के पास ई-ऑफिस प्रणाली के माध्यम से ही भेजना प्रारंभ करें। निगम आयुक्त संघ

प्रिय ने विभागीय अधिकारियों को यह भी निर्देशित किया है कि अपने-अपने ऑफिस में ई-ऑफिस के संबंध में सभी कर्मचारियों को विस्तृत जानकारी भी दें। कर्मचारियों को आवश्यकता हो तो ई-ऑफिस का प्रशिक्षण भी दिलाया जाए। जो फाइलें ई-ऑफिस के माध्यम से सक्षम स्वीकृति हेतु प्रेषित की जाएं उनका व्यवस्थित रिकॉर्ड भी विभागीय अधिकारी संभारित करें। उन्होंने ऐसे विभागीय अधिकारियों को जिन्होंने ई-ऑफिस पोर्टल पर पंजीयन नहीं कराया है उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि वे शीघ्र अपना पंजीयन कराकर फाइलों को सक्षम स्वीकृति हेतु ई-ऑफिस के माध्यम से ही भेजें।

वैश्य फाउंडेशन महिला ईकाई ने किया माता की चौकी कार्यक्रम का आयोजन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-ग्वालियर। गत दिवस वैश्य फाउंडेशन महिला ईकाई द्वारा माता की चौकी का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि बंदना भूपेंद्र प्रेमी, संस्थापक अध्यक्ष मुकेश अग्रवाल, संरक्षक ममता अग्रवाल, ऋचा अग्रवाल, अध्यक्ष वंदना अग्रवाल, अध्यक्ष अंजुलता गुप्ता, महामंत्री सुनीता अग्रवाल, संयोजिका बबिता अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, मंजू जिंदल एवं संस्था के समस्त सदस्यगण उपस्थित रहे। संस्था के सदस्य रश्मि गोयल, वैशाली अग्रवाल, किरण अग्रवाल, अर्चना अग्रवाल, माधुरी अग्रवाल, अलका अग्रवाल आदि उपस्थित रहे। माता के सोलह श्रृंगार प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे -



प्रथम पुरस्कार : रानी गुप्ता, द्वितीय पुरस्कार : रश्मि गोयल, तृतीय पुरस्कार : अनीता बिंदल, सात्वता पुरस्कार: माधुरी गर्ग, पंचुअलिटी अवार्ड :



साधना अग्रवाल। माँ भगवती के भजनों एवं भक्तिमय वातावरण में सभी ने माँ का आशीर्वाद प्राप्त किया।

व्हीलचेयर क्रिकेट प्रतियोगिता में उत्तरप्रदेश ने राजस्थान को 5 विकेट से हराया



-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-मुरैना। मुरैना के चंबल डिवीजन क्रिकेट मैदान पर खेली जा रही 5वीं नेशनल व्हीलचेयर क्रिकेट प्रतियोगिता के सेंट्रल जोन के दूसरे मुकाबले में उत्तरप्रदेश ने राजस्थान को 5 विकेट से हराकर फाइनल में प्रवेश कर लिया है। इस मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी राजस्थान टीम एक समय 4 ओवर में 31 रन बनाकर अच्छी स्थिति में थी, लेकिन उत्तर प्रदेश के शैलेश के 4 विकेट की बदौलत टीम 86 रन पर ऑल आउट हो गई, जिसे उत्तरप्रदेश ने अरविंद के नाबाद 35 रन की बदौलत 5 विकेट से जीत हासिल कर ली। मुकाबले में में ऑफ द मैच उत्तरप्रदेश के शैलेश रहे। राजस्थान का दूसरा व अंतिम मैच शनिवार को मध्यप्रदेश से होगा।



मध्यप्रदेश विद्युत नियामक आयोग की टेरिफ में संशोधन हेतु राज्य सलाहकार समिति की बैठक में ऑनलाइन शामिल हुए अध्यक्ष डॉ. प्रवीण अग्रवाल

घरेलू व गैरघरेलू उपभोक्ताओं के हितों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत किए महत्वपूर्ण सुझाव

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। म.प्र. विद्युत नियामक आयोग की आज भोपाल में आयोजित बैठक में अध्यक्ष-डॉ. प्रवीण अग्रवाल ने ऑनलाइन शामिल होकर, प्रदेश के घरेलू व गैरघरेलू उपभोक्ताओं की वास्तविक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, अपने सुझावों में कहा कि टेरिफ की दरों में किसी भी प्रकार की वृद्धि नहीं होनी चाहिए क्योंकि हमारे यहाँ टेरिफ की दरें अन्य प्रदेशों की तुलना में पूर्व से ही अधिक हैं। साथ ही, आपने अनुबंध के संबंध में कहा कि अनुबंध की जो 02 वर्ष तक की अवधि है, जिसमें उपभोक्ता अपने लोड को कम नहीं करा सकते हैं और न ही 02 वर्ष तक विद्युत कनेक्शन को कटवा सकते हैं। यह गलत है क्योंकि जब



उपभोक्ता कोई नया विद्युत कनेक्शन लेता है, तब उसका जो भी चार्ज बनता है, वह देता है और 50 किलोवाट से अधिक का कनेक्शन होने पर नया ट्रांसफार्मर उपभोक्ता द्वारा लगवाया जाता है और उसका पूरा खर्चा भी उठाना होता है, जो कि कनेक्शन कटवाने पर वापिस नहीं मिलता है। तब ऐसी स्थिति में कनेक्शन को कटवाने अथवा लोड को कम करवाने पर भी कोई बाध्यता नहीं होनी चाहिए। इसके साथ ही आपने प्रत्येक माह में लिए जाने वाले 'मिनीमम चार्ज' पर सुझाव देते हुए माँग की कि जिस महीने में उपभोक्ता द्वारा विद्युत का उपयोग नहीं किया जाता है, उस माह में 'मिनीमम चार्ज' भी उपभोक्ता से नहीं लिया जाना चाहिए।

पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क में प्रारंभ हुआ निःशुल्क योग शिविर

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-मुरैना। वार्ड क्र. 12 के पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क कमिश्नर कॉलोनी में निःशुल्क योग शिविर का आरंभ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधायक रघुराज कंधाना, पूर्व पार्षद रमेश शर्मा उपस्थित रहे। यह शिविर 20 फरवरी से 15 मार्च तक चलेगा। इस अवसर पर पूर्व विधायक रघुराज सिंह कंधाना ने कहा कि व्यक्ति को दिनभर की भागदौड़ भरी जिंदगी में खुद के लिए 1 घंटे



सुबह योग, व्यायाम करना चाहिए। शास्त्रों में भी लिखा है पहला सुख निरोगी काया है, इसलिए स्वस्थ रहने के लिए नियमित योग अभ्यास करना चाहिए। मुख्य शिक्षक के रूप में श्रीमती कृष्णा सोनी उपस्थित हुईं और योग अभ्यास कराया। आनंदजय मंडल ने तहसीलदार